दत्तात्रेयतन्त्र

हिन्दी टीका सहित



श्री:

श्रीदत्तात्रेयतन्त्र

श्रीयुत पंडित श्यामसुन्दरलाल
त्रिपाठी विरचित

हिन्दीटीकासहित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : जून २०१६, सवंत् २०७३

मूल्य : ५० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका

"यद्गृहे निवसेत्तन्त्रं तत्र लक्ष्मीः स्थिरायते" महाशय! तंत्रशास्त्रके पठन पाठन और मनन करनेसे अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है। जो कार्य सहस्रशः व्रत करनेपर भी सिद्ध नहीं होता वही कार्य तंत्र शास्त्रकी केवल एक क्रियासे ही सरलतापूर्वक हो सकता है। योगिराज श्रीदत्तात्रेयप्रणीत यह ग्रन्थ यन्त्र--मन्त्राकांक्षियों कौतुकियों और रसायनिकोंके हितार्थ अद्वितीय है। इसमें-अनेक प्रकारके उपयोगी तथा सिद्धि देनेवाले मन्त्र, मोहन, मारण, उच्चाटन, वशीकरण, स्तम्भनादि अनेक प्रकारके प्रयोग उत्तमतापूर्वक वर्णित हैं। इसके सिवाय अन्यान्य ग्रन्थोंमें जो २ विषय अतिक्लिष्ट हैं उन सबका इस ग्रन्थमें भलीभांति समावेश हुआ है। मन्त्र-तन्त्रके ज्ञाता जैसा इससे लाभ उठा सकते हैं उतनाही लाभ इसे सामान्य व्यक्ति भी उठा सकेंगे। यह ग्रन्थ संस्कृतमें होनेसे सर्वसाधारणको इसका लाभ नहीं होता था इस कारण मुरादाबाद निवासी श्रीयुत पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठीजीसे इसकी सरल सुबोध भाषाटीका कराय हमने निज "श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रणालयमें मुद्रित कर प्रसिद्ध किया है। आशा है कि यन्त्रशास्त्र प्रेमी महाशय इसके अवलोकनसे लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रमको सफल करेंगे।

विद्वज्जनकृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास

"श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष, बम्बई.

विषयानुक्रमणिका

।।इत्यनुक्रमणिका समाप्त।।

श्री :



श्रीदत्तात्रेयतन्त्र

हिन्दीटीकासहित

प्रथम पटल

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् ।
दत्तात्रेयस्तु पप्रच्छ शंकरं लोकशंकरम् ।। १ ।।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा पृच्छते भक्तवत्सल ।
भक्तानां च हितार्थाय कल्पतन्त्रञ्च कथ्यताम् ।। २ ।।

कैलास पर्वतकी चोटीपर विराजमान देवदेव जगत्के गुरु संसारके कल्याण करनेवाले श्रीशंकर भगवान्से दत्तात्रेयजी हाथ जोडकर पूछते हुए कि हे भक्त-वत्सल ! भक्तोंके हितके लिये आप कल्पतंत्रको कहिये ।। १ ।। २ ।।

कलौ सिद्धिप्रदं कल्पं तन्त्रविद्याविधानकम् ।
कथयस्व महादेव देवदेव महेश्वर ।। ३ ।।

हे महादेव ! हे देवदेव ! हे महेश्वर ! कलिकालमें सिद्धि देनेवाले महा कल्पतन्त्रको विधिसे कहिये ।। ३ ।।

सन्ति नानाविधा लोके यन्त्रमन्त्राभिचारका: ।
आगमोक्ता: पुराणोक्ता वेदोक्ता डामरे तथा ।। ४ ।।
उड्डीशे मेरुतन्त्रे च कालीचण्डेश्वरे मते ।
राधातन्त्रे च उच्छिष्टे धारातन्त्रे मृडेश्वरे ।। ५ ।।

हे प्रभो ! लोकमें अनेक प्रकारके आगमोक्त, पुराणोक्त और वेदोक्त डामर, उड्डीश, मेरुतंत्र, कालीतन्त्र, चण्डेश्वर, राधातन्त्र, उच्छिष्टतन्त्र, धारा

तन्त्र और मृडेश्वर आदि तंत्रोंमें यंत्र मन्त्र एवं अभिचारके प्रयोगोंका वर्णन है ।। ४ ।। ५ ।।

ते सर्वे कीलिताश्चैव कलौ वीर्यविवर्जिताः ।
ब्राह्मणाः कामक्रोधाढ्या एतस्मादेव कारणात् ।। ६ ।।

सो वे सब कीलकर कलियुगमें शक्तिहीन करदिये गये क्योंकि ब्राह्मण कामी और क्रोधी होगये हैं ।। ६ ।।

विना कीलकमन्त्राश्च तन्त्राश्च कथिताः शिव ।
तन्त्रविद्यां क्षणं सिद्धिं कथयस्व मम प्रभो ।। ७ ।।

हे शिव ! हे प्रभो ! विना कीले हुए मन्त्र और तन्त्र जो कहे हैं सो और क्षणमात्रमें सिद्धि देनेवाली तन्त्रविद्याको मुझसे कहिये ।। ७ ।।

ईश्वर उवाच

शृणु सिद्धि महायोगिन् सर्वयोगविशारद ।
तन्त्रविद्यां महागुह्यां देवानामपि दुर्लभाम् ।। ८ ।।

शिवजी बोले—हे महायोगिन् (दत्तात्रेयजी) ! हे सर्व योगविशारद ! तंत्रविद्या परमगुप्त होनेके कारण देवताओंको भी दुर्लभ है ।। ८ ।।

तवाग्रे कथ्यते देव तन्त्रविद्याशिरोमणिः ।
गुह्याद्गुह्या महागुह्या गुह्या गुह्या पुनः पुनः ।। ९ ।।

हे देव ! तुमसे तन्त्रविद्याशिरोमणिको कहता हूं यह गुप्तसे गुप्त महागुप्त है अतएव वारंवार इसको गुप्त ही रखना चाहिये ।। ९ ।।

गुरुभक्ताय दातव्या नाभक्ताय कदाचन ।
मम भक्त्येकमनसे दृढचित्तयुताय च ।। १० ।।

जो मेरी भक्तिमें लीन, दृढचित्त एवं गुरुका भक्त हो उसको तन्त्र विद्या देनी चाहिये अभक्तको नहीं दे ।। १० ।।

शिरो दद्यात्सुतं दद्यान्न दद्यात्तन्त्रकल्पकम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ।। ११ ।।

समय पडनेपर अपना शिर देदे, पुत्र देदे, परन्तु हरएकको यह तन्त्रकल्प नहीं दे यह मेरा सत्य वचन मानो ।। ११ ।।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दत्तात्रेय तथा शृणु ।
कलौ सिद्धमहामन्त्रो विना कीलेन कथ्यते ।। १२ ।।

हे दत्तात्रेयजी ! अब मैं कलियुगमें सिद्धि देनेवाले बिनाकीले हुए मन्त्रोंको कहता हूँ उनको सुनो ।। १२ ।।

न तिथिर्न च नक्षत्रनियमो नास्ति वासरः ।
न व्रतं नियमो होमः कालबल विवर्जितम् ।। १३ ।।
केवलं तन्त्रामात्रेण ह्योषधिः सिद्धिरूपिणी ।
यस्य साधनमात्रेण क्षणात्सिद्धिश्च जायते ।। १४ ।।

जिसके साधनमें तिथि, नक्षत्र, दिन, व्रत, नियम, हवन और समयके विचारकी भी आवश्यकता नहीं है । उसमें केवल तन्त्रमात्रसे औषधि सिद्धिरूपिणी हो जाती है, जिसके प्रयोगसे मनुष्य क्षणभरमें सिद्धि प्राप्त करता है ।। १३ ।। १४ ।।

मारणं मोहनं स्तम्भो विद्वेषोच्चाटने वशम् ।
आकर्षणं चेन्द्रजालं यक्षिणी च रसायनम् ।। १५ ।।

मारण, मोहन, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, इन्द्रजाल, यक्षिणीसाधन, रसायनविद्या ।। १५ ।।

कालज्ञानमनाहारं साहारं निधिदर्शनम् ।
वन्ध्यापुत्रवतीयोगं मृतवत्सासुतजीवनम् ।। १६ ।।

कालज्ञान, अनाहार, आहार, निधिदर्शन, वन्ध्यापुत्रवतीयोग, मृतवत्सासुतजीवम ।। १६ ।।

जयवादं वाजिकरणं भूतग्रहनिवारणम् ।
सिंहव्याघ्रभयं सर्पवृश्चिकानां तथैव च ।। १७ ।।
निवारणं भयात्तेषां नान्यथा मम भाषितम् ।
गोप्यं गोप्यं महागोप्यं गोप्यं गोप्यं पुनः पुनः ।। १८ ।।

जयवाद, वाजीकरण, भूतग्रहनिवारण, सिंह, व्याघ्र, सर्प और बीछी आदिके भय निवारणके इस तन्त्रमें सत्य प्रयोग कहे हैं सो इनको यत्नसे गुप्त रक्खे ।। १७ ।। १८ ।।

सर्वोपरिमन्त्र :—"ओं परब्रह्मपरमात्मने नमः । उत्पत्तिस्थितिप्रलयकराय ब्रह्महरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकानि दर्शय दर्शय दत्तात्रेयाय नमः तन्त्रसिद्धि कुरुकुरु स्वाहा" अयुतजपात्सिद्धिः । अष्टोत्तरशतजपात् कार्यं सिद्धिर्भवति ।

उपरोक्त 'ॐ परब्रह्मपरमात्मने, से 'स्वाहा' तक सर्वोपरि मन्त्र है । इसे दश हजार जपकर प्रथम सिद्ध कर ले पीछे अष्टोत्तरशत जपनेसे कार्य सिद्ध होता है ।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे तन्त्रविषयसर्वोपरिमन्त्रकथनं नाम प्रथमः पटलः ।। १ ।।

द्वितीय पटल

मारण

ईश्वर उवाच

अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ।। १ ।।

शिवजी बोले—हे दत्तात्रेयजी ! अब मनुष्योंको शीघ्र सिद्धिदायक मारणके प्रयागोंको वर्णन करूंगा तुम सावधानीसे सुनो.।। १ ।।

मारणं न वृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणान्तसंकटे जाते कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता ।। २ ।।

निष्प्रयोजन मारणका प्रयोग किसीपर न करे, मरनेके समान संकट उपस्थित होनेपर अपने कल्याणकी इच्छासे मारणके प्रयोगका साधन करे ।। २ ।।

ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ।
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ।। ३ ।।

जो ब्रह्मज्ञानी पुरुष अपनी दृष्टिसे सर्वत्रही ब्रह्मको देखता है वह आवश्यकता होनेसे मारणके प्रयोगको करे तो ठीक है नहीं तो दोष लगता है ।। ३ ।।

तस्माद्रक्ष्यः सदात्मा हि मरणं न क्वचिच्चरेत् ।
कर्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत् ।। ४ ।।

अतएव अपनी रक्षा चाहनेवाला मनुष्य मारणको न करे यदि मारण प्रयोग करना ही पडे तो इस प्रकारसे करे ।। ४ ।।

चिताभस्मासमायुक्तं धत्तूरचूर्णसंयुतम् ।

यस्याङ्गे निक्षिपेद्भौमे सद्यो याति यमालयम् ।। ५ ।।

चिताकी भस्ममें धत्तूरेका चूर्ण मिलाय मंगलके दिन जिसके शरीर पर डाले वह शीघ्र मरजाता है ।। ५ ।।

भल्लातकोद्भवं तैलं कृष्णसर्पस्य दन्तकम् ।

विषं धत्तूरसंयुक्तं यस्याङ्गे निक्षिपेन्मृतिः ।। ६ ।।

भिलावेका तेल, काले सर्पके दांत और विषको धतूरेके चूर्णमें मिलाय जिसके अंगपर छोड़े उसकी मृत्यु होजाती है ।। ६ ।।

नरास्थिचूर्णं ताम्बूले भुक्तं मृत्युकरं ध्रुवम् ।

सर्पास्थिचूर्णं यस्याङ्गे निक्षिपेन्मृत्युमाप्नुयात् ।। ७ ।।

मनुष्यकी हड्डीका चूर्ण पानमें खिलानेसे मनुष्य की मृत्यु होती है, सर्पकी हड्डीका चूर्ण जिसके अंगपर डाला जाय वह मरजाता है ।। ७ ।।

चिताकाष्ठं गृहीत्वा तु भौमे च भरणीयुते ।

निखनेच्च गृहीत्वा तु मासे मृत्युर्भविष्यति ।। ८ ।।

भौमवारके दिन भरणी नक्षत्र होनेपर चितामेंसे लकडी लाकर जिसके दरवाजेपर गाड़ दे उसकी एक मासमें मृत्यु होजाती है ।। ८ ।।

कृष्णसर्पवसा ग्राह्या तद्वर्ति ज्वालयेन्निशि ।

धत्तूरवीजतैलेन कज्जलं नृकपालके ।। ९ ।।

चिताभस्मसमायुक्तं लवणं पंच संयुतम् ।

यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ।। १० ।।

काले सर्पके चर्वीकी बत्ती बनाय धतूरेके बीजोंके तेलद्वारा मनुष्यकी खोपडीमें काजल पारे फिर उसमें चिताकी भस्म और पांचों नोनमिला चूर्णकर जिसके अंगपर डाले उसकी शीघ्र मृत्यु होती है ।। ९–१० ।।

गृहीत्वा वार्श्चिकं मांसमुलूकचूर्णसंयुतम् ।

यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णंतन्नॄर्मृत्युर्भविष्यति ।। ११ ।।

बीछी और उल्लूके मांसका चूर्ण जिसके अंगपर डाले उसकी मृत्यु हो जाती है ।। ११ ।।

लिखेत्पंचदशीयन्त्रं चिताभस्मविलोमतः ।
स्मशानाग्नौ क्षिपेद्यन्त्रं भौमे च म्रियते रिपुः ।। १२ ।।

चिताकी भस्मसे पंचदशीयन्त्रको विलोमरीतिसे लिख मंगलके दिन चिताकी अग्निमें डालनेसे शत्रुकी मृत्यु होती है ।। १२ ।।

उल्लूविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्विताम् ।
यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ।। १३ ।।

उल्लूकी विष्ठाको ले विष मिलाय चूर्णकर जिसके अंगपर डाले वह शीघ्र मरजाता है ।। १३ ।।

रिपुविष्ठां गृहीत्वा च नृकपाले तु धारयेत् ।
उद्याने निखनेद्भूमौ यस्य नाम लिखेत्स हि ।। १४ ।।
यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्मृतो भवेत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ।।१५।।

शत्रुकी विष्ठाको ले मनुष्यकी खोपडीमें रख उद्यानमें जिसका नाम लखकर गाडे तो विष्ठाके सूखनेतक निश्चय शत्रु मरजाता है इस प्रयोगको हिरएक मनुष्यको न दे ।। १४-१५ ।।

कृकलाया वसातैलं यस्याङ्गे बिन्दुमात्रतः ।
निक्षिपेन्म्रियते शत्रुर्यदि रक्षति शंकरः ।।१६।।

गिरगिटकी चर्बीका तेल जिसके अंगपर बूंदभर भी डाल दिया जाय तो उसकी शंकरके रक्षा करनेपर भी मृत्यु होजाती है ।। १६ ।।

गृहदीपे तु निक्षिप्तं लवणं विजयायुतम् ।
यस्य नाम्ना मृतिः सत्यं मासेनैकेन निश्चिता ।। १७ ।।
ओं नमः कालरूपाय अमुकं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके लवण और भांगको जिसके नामसे दीपक में डाले उसकी एक मासमें निश्चय मृत्यु होजाती है ।। १७ ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे मारणप्रयोगो नाम द्वितीयः पटलः ।। २ ।।

तृतीय पटल

मोहन

ईश्वर उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां श्रृणु योगिन्द्र यत्नतः ।। १ ।।

शिवजी बोले–हे योगींद्र ! अब मोहनके प्रयोगका कहता हूं जिसके सुननेसे मनुष्योंको शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है उसको तुम यत्नसे सुनो ।। १ ।।

तुलसीबीजचूर्णस्य सहदेव्या रसेन च ।
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सकलं जगत् ।। २ ।।

रविवारके दिन तुलसीके बीजोंका चूर्ण सहदेवीके रसमें मिलाकर तिलक लगानेसे मनुष्य सब जगत्को मोह लेता है ।। २ ।।

हरितालं चाश्वगन्धां पेषयेत्कदलीरसैः ।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ।। ३ ।।

हरताल, असगन्ध और गोरोचनको केलेके रसमें पीस तिलक लगानेसे मनुष्य सबको मोहित करता है ।। ३ ।।

श्रृंगीचन्दनसंयुक्तं वचाकुष्ठसमन्वितम् ।
धूपं देहे तथा वस्त्रे मुखे चैव विशेषतः ।।
राजप्रजापक्षिपशुदर्शनान्मोहकारकम् ।। ४ ।।

काकडासिंघी, चंदन, वच और कूठकी धूप शरीरमें, मुखमें और वस्त्रोंमें दे तो देखते ही राजा, प्रजा और पशु, पक्षी मोहित होजाते हैं ।। ४ ।।

गृहीत्वा मूलताम्बूलं तिलकं लोकमोहनम् ।। ५ ।।

पानकी जडको पीस तिलक लगानेसे भी सब मोहित होजाते हैं ।। ५ ।।

सिन्दूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ।
धात्रीरसेन संपिष्टं तिलकं लोकमोहनम् ।। ६ ।।

सिन्दूर, केशर और गोरोचनको आमलेके रसमें पीस तिलक लगानेसे सब मोहित होजाते हैं ।। ६ ।।

मनःशिलाञ्च कर्पूरं पेषयेत्कदलीरसैः ।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथा मम भाषितम् ।। ७ ।।

मनशिल, कपूरको केलेके रसमें पीस तिलक लगानेसे सब मनुष्योंको मोहित करता है यह मेरा सत्य वचन जानो ।। ७ ।।

सिन्दूरञ्च वचां श्वेतां ताम्बूलरसपेषिताम् ।
अनेनैव तु मन्त्रेण तिलकं लोकमोहनम् ।। ८ ।।

सिन्दूर और सफेद बचको पानके रसमें पीसकर मंत्रसे अभिमंत्रित कर तिलक लगानेसे सबको मोह लेता है ।। ८ ।।

भृङ्गराजो ह्यपामार्गो लाजा च सहदेविका ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ।। ९ ।।

भांगरा, अपामार्ग, लज्जावंती और सहदेवीको पीस तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकीको मोह लेता है ।। ९ ।।

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु हरितालञ्च पेषयेत् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ।। १० ।।

सफेद दूर्वाको हरितालके साथ पीस तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकीको मोह लेता है ।। १० ।।

गृहीत्वौदुम्बरं पुष्पं वर्तिं कृत्वा विचक्षणः ।
नवनीतेन प्रज्वाल्य कज्जलं कारयेन्निशि ।। ११ ।।
कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे मोहनं सर्वतो जगत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ।। १२ ।।

बुद्धिमान् मनुष्य गूलरके फूलकी बत्ती बनाय मक्खनसे दीपक रात्रिमें बालकर काजल पारे । उस काजलको नेत्रोंमें लगानेसे मनुष्य सब जगत्को मोहित करता है, यह प्रयोग देवताओंको भी दुर्लभ है अतएव हरएकको न दे ।। ११ ।। १२ ।।

श्वेतगुञ्जारसे पेष्यं ब्रह्मदण्डीयमूलकम् ।
लेपमात्रे शरीराणां मोहनं सर्वतो जगत् ।। १३ ।।

ब्रह्मदण्डीको सफेद घुंघुचीके रसमें पीस शरीरमें लेपमात्र करनेसे सब जगत्को मोहित करता है ।। १३ ।।

बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसा युक्तं वटीं कृत्वा तु गोलकम् ।। १४ ।।

एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहनं सर्वतो जगत् ।
क्षणेन मोहनं याति प्राणैरपि धनैरपि ।। १५ ।।

बेलके पत्तोंको ले छायामें सुखाय कपिला गौके दूधमें पीस गोली बनावे। इस गोलीके तिलक लगानेसे सम्पूर्णजगत् प्राण और धनसे मोहित हो जाता है ।। १४ ।। १५ ।।

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचन्दनसंयुतम् ।
अनेन लेपयेद्देहं मोहनं सर्वतो जगत् ।। १६ ।।

सफेद आककी जडको सफेद चंदनमें मिलाकर शरीरमें लगानेसे सब जगत् मोहित होजाता है ।। १६ ।।

विजयापत्रमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ।
अनेन लेपयेद्देहे मोहनं सर्वतो जगत् ।। १७ ।।

भांगको सफेद सरसोंमें मिला शरीरमें लेप करनेसे जगत् मोहित हो जाताहै।१७।

गृहीत्वा तुलसीपत्रं छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
अश्वगंधासमायुक्तं विजया बीजसंयुतम् ।। १८ ।।
कपिलादुग्धसार्द्धेन वटी टंकप्रमाणतः ।
भक्षिता प्रातरुत्थाय मोहनं सर्वतो जगत् ।। १९ ।।

तुलसीके पत्तोंको छायामें सुखाय असगंध और भांग मिलाकर कपिला गौके दूधके साथ चार मासेकी गोली बनावे । यह गोली प्रातः समय खानेसे मनुष्य सब जगत्को मोह लेता है ।। १८ ।। १९ ।।

कटुतुम्बीबीजतैलं ज्वालयेत्पटवर्त्तिकाम् ।
कज्जलं चाञ्जयन्नेत्रे मोहनं सर्वतो जगत् ।। २० ।।

कडुई तोंबीके तेलमें कपडेकी बत्ती डाल दीपक जलाय काजल वारे फिर उसे नेत्रोंमें लगानेसे सब जगको मोह लेता है ।। २० ।।

पंचांगदाडमीं पिष्ट्वा श्वेतगुंजासमन्विताम् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहनं सर्वतो जगत् ।। २१ ।।

दाडमीके पंचांगोंको सफेद घुंघुचीके साथ पीसकर तिलक लगानेसे सब जगत्को मोह लेता है ।। २१ ।।

इतिश्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे मोहनप्रयोग कथननाम तृतीयःपटलः ३

---

१ फल, फूल, पत्ते, छाल और जडको वृक्षका पंचांग कहते हैं ।

चतुर्थ पटल

स्तम्भन

ईश्वर उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तम्भनाभिधम् ।
यस्य साधनमात्रेण सिद्धिः करतले भवेत् ।। १ ।।

शिवजी बोले–दत्तात्रेयजी ! अब स्तम्भनप्रयोग कहता हूं जिसके साधनसे मनुष्यकी हथेलीमें सिद्धि होजाती है ।। १ ।।

तत्रादौ संप्रवक्ष्यामि अग्निस्तम्भनमुत्तमम् ।
वसां गृहीत्वा माण्डूकीं कौमारीरसपेषणम् ।। २ ।।

मण्डूकस्य वसा ग्राह्या कर्पूरेणैव संयुता ।
लेषमात्रे शरीराणामग्निस्तम्भः प्रजायते ।। ३ ।।

प्रथम श्रेष्ठ अग्निस्तंभनको कहूंगा, मेढककी चर्बीको लेकर घीकुवारके रसमें पीसकर अथवा मेढककी चर्बीमें वच और कपूरको पीसकर शरीरमें लेप करे तो शरीर अग्निसे नहीं जलेगा ।। २–३ ।।

कुमारीरसयुक्तेन तैलेनाभ्यंगमाचरेत् ।
अग्निश्च न दहेदङ्गमग्निस्तम्भः प्रजायते ।। ४ ।।

घीकुवारके रसमें तेल मिलाय शरीरमें लगानेसे शरीर आगसें नहीं जलता है ।। ४ ।।

कदलीरसमादाय कुमारीरसपेषणम् ।
अर्कदुग्धसमायुक्तमग्निस्तम्भः प्रजायत ।। ५ ।।

केलेके रसमें घीकुवारका रस और आकका दूध मिलाकर लेप करनेसे आगसे नहीं जलता है ।। ५ ।।

कुमारीरसलेपेन किञ्चिद्वस्तु न दह्यते ।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ।। ६ ।।

घीकुवारके रसके लेप करनेसे कोई वस्तु आगसे नहीं जलती है. अग्नि स्तम्भनके योग मेरे कहे सत्य जानो ।। ६ ।।

पिप्पलीं मरिचं शुंठीं चर्वयित्वा ततः पुनः ।
दीप्तांगारं नरो भक्षेन्न ततो दह्यते क्वचित् ।।७।।

पीपल, गोल मिर्च, और सोंठको चाबकर जलते हुए अंगारेको मुखमें रखनेसे मुख नहीं जलता है ।। ७ ।।

आज्यं शर्करया पीत्वा चर्वयंस्तगरं तथा ।
तप्तलोहं लिहेत्पश्चाद्वक्त्रं न दह्यते क्वचित् ।।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ।। ८ ।।

तगरको चाबे ऊपरसे घी और शक्कर पिये तो जलते हुए लोहेको मुखमें रखनेसे मुख नहीं जलेगा, इस अग्निस्तंभन योगको मेरा कहा सत्य जानो ।।८।।

मंत्र :–ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरस्तंभनं
कुरुकुरु स्वाहा । अयुतजपात् सिद्धिः ।।

उपरोक्त मन्त्र अग्निस्तंभनका है १०००० जपनेसे यह सिद्ध होजाता है।

स्थानस्तम्भन

नृकपाले मृदं क्षिप्त्वा श्वेतगुंजाञ्च निर्वपेत् ।
गोदुग्धेन तु संसिच्य कुर्य्याद्गुंजालतां शुभाम् ।। ९ ।।
यस्यांगे तल्लता क्षिप्ता स्थानस्तंभः प्रजायते ।
यस्य नाम्ना च लवणैः श्मशानाग्नौ हुनेत्तथा ।।१०।।
ओं नमो दिगम्बराय अमुकस्यासनं स्तंभय २ फट्
स्वाहा । अस्य मंत्रस्य लक्षजपात्सिद्धिर्भवति ।।११।।

मनुष्यकी खोपडीमें मट्टी भरकर सफेद घुंघचीके बीज बोवे और गौके दूधसे सीचे उसमें जो घुंघुचीकी लता उत्पन्न हो उस लताको जसके अंगपर डाले उसका आसन स्तंभित होता है । जिसका नाम लेकर श्मशानकी आगमें लवणके साथ मन्त्र पढकर उस लताका हवन करे उसका आसन स्तंभित होजाता है । मन्त्र मूलमें स्पष्ट लिखा है, वह एक लक्ष जपनेसे सिद्ध होता है ।। ९–११ ।।

बुद्धिस्तम्भन

उलूकस्य कपेर्वापि तांबूले यस्य दापयेत् ।
विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तंभः प्रजायते ।। १२ ।।
भृंगराजो ह्यपामार्गः सिद्धार्थः सहदेविका ।
कोलं वचा च श्वेतार्कस्सत्त्वमेषां समाहरेत् ।। १३ ।।

लोहपात्रे विनिक्षिप्य त्रिदिनं मर्दयेत्सुधीः ।
ललाटे तिलकं कुर्याद् दुष्टबुद्धिः प्रणश्यति ।। १४ ।।
मंत्रः—ॐ नमो भगवते अमुकस्य स्तंभनं कुरु-
कुरु फट् स्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ।। १५ ।।

उल्लू पक्षीकी और बन्दरकी विष्ठाको पानमें रखकर खिलानेसे बुद्धि स्तंभित होती है । भांगरा, अपामार्ग, सरसों, सहदेवी, कंकोली, वच और सफेद आकके सतको लेकर लोहेके पात्रमें डाल तीन दिन तक मन्त्र पढता हुआ बुद्धिमान् पुरुष मर्दन करे चौथे दिन शत्रुके नामसे मस्तकपर तिलक लगाय शत्रुके आगे जानेसे शत्रुकी बुद्धि नष्ट होजाती है । मन्त्र मूलमें लिखा है । एक लाख जपनेसे सिद्ध होता है।। १२–१५ ।।

शस्त्रस्तम्भन

पुष्यार्के तु समुद्धृत्य विष्णुक्रान्तां समूलिकाम् ।
वक्त्रे शिरसि धार्यं तच्छस्त्रस्तम्भः प्रजायते ।। १६ ।।

रविवारको पुष्यनक्षत्र होनेसे विष्णुक्रांताको जडसमेत उखाडकर मुखमें अथवा शिरमें धारण करनेसे शस्त्र स्तंभित होता है ।। १६ ।।

पुष्यार्के तु समादाय अपामार्गस्य मूलकम् ।
घृष्ट्वा लिपेच्छरीरे स्वे शस्त्रस्तम्भः प्रजायते ।। १७ ।।

रविवारको पुंष्यनक्षत्रमें आपामार्गकी जड लाकर घिसकर अपने शरीरमें लगानेसे शस्त्रका असर शरीरपर नहीं होता है ।। १७ ।।

करे सौदर्शनं मूलं बद्ध्वा तालस्य वै मुखे ।
केतक्या मस्तके क्षिप्तं खड्गस्तम्भः प्रजायते ।। १८ ।।

हाथमें सुदर्शनकी जड, मुखमें ताडकी जड और मस्तकमें केतकीकी जड़ धारण करनेसे उसपर खड्ग असर नहीं करता है।। १८ ।।

एतानि त्रीणि मूलानि चूर्णितानि घृतं पिबेत् ।
आयाताऽनेकशस्त्राणां समूहं स निवारयेत् ।। १९ ।।

सुदर्शनकी जड, ताडकी जड और केतकीकी जडका चूर्ण कर घीमें मिला कर मन्त्रसे अभिमंत्रितकर पीनेंसे चलते हुए अनेकप्रकार शस्त्रोंको वह निवारण करता है अर्थात् कोई शस्त्र उसके शरीरमें नहीं लगता है ।। १९ ।।

खर्जूरी मुखमध्यस्था करे बद्ध्वा च केतकी ।
भुजदण्डस्थितं चार्कं सर्वशस्त्रनिवारणम् ।। २० ।।

खजूरको मुखमें रख हाथमें केतकी और भुजदंडमें आकको बाँधनेसे सब शस्त्रोंका निवारण होता है ।। २० ।।

गृहीत्वा रविवारे च बिल्वपत्रं सुकोमलम् ।
पिष्ट्वा विषसमं चैव शस्त्रस्तम्भनलेपनम् ।। २१ ।।

रविवारके दिन कोमल वेलके पत्तोंको लावे और विष मिलाकर पीस लेप करनेसे शस्त्रका स्तम्भन होता है ।। २१ ।।

पुष्पार्के श्वेतगुञ्जाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ।
हस्ते शस्त्रभयं नास्ति संगरे च कदाचन ।। २२ ।।
मन्त्रः—ओं नमो भगवते महाबलपराक्रमाय शत्रूणां
शस्त्रस्तम्भनं कुरु २ स्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ।

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्र में सफेद घुंघुचीकी जड उखाडकर धारण करनेसे संग्राममें शस्त्रका भय नहीं रहता है । ओं नमो भगवते 'स्वाहा' तक स्तम्भन मन्त्र है एकलाख जपनेसे सिद्ध होता है ।। २२ ।।

सेनास्तम्भन

चिताङ्गारेण विलिखेन्मन्त्रं पात्रे च मृन्मये ।
रिपुनामयुतं तच्च जलकुण्डे विनिक्षिपेत् ।। २३ ।।

चिताके अंगारेसे मट्टीके पात्रमें मन्त्र पढकर शत्रुका नाम लिख कुंडमें डालनेसे सेनास्तम्भन होता है ।। २३ ।।

मन्त्रभावे गृहीत्वा तु श्वेतगुंजां विधानतः ।
निखनेत्तु श्मशाने च पाषाणैस्तु पिधापयेत् ।। २४ ।।

मंत्र पढकर सफेद घुंघुचीको लाकर श्मशानमें गाडे, ऊपरसे पत्थर रख दे ।। २४ ।।

अष्टौ च योगिनीः पूज्य ऐन्द्रीं माहेश्वरीं तथा ।
वाराहीं नारसिंहीं च वैष्णवीं च कुमारिकाम् ।। २५ ।।

लक्ष्मीं ब्राह्मीं च सम्पूज्य गणेशं वटुकं तथा ।
क्षेत्रपालं तथा पूज्य सेनास्तम्भो भविष्यति ।। २६ ।।
पृथक् पृथक् बलिं दद्यात्तस्य नामाभिभागतः ।
मद्यं मांसं तथा पुष्पं धूपं दीपं बलिक्रिया ।। २७ ।।

१ ऐन्द्री २ माहेश्वरी ३ वाराही ४ नारसिंही ५ वैष्णवी ६ कुमारिका ७ लक्ष्मी ८ ब्राह्मी आठों योगिनी का एवं गणेश, वटुक और क्षेत्रपालका पूजन करके पृथक २ मद्य, मांस, पुष्प, धुप, दीपकी मंत्रपूर्वक बलि दे तो सेनाका स्तम्भन होजाता है ।। २५–२७ ।

ओंनमः कालरात्रि शूलधारिणि मम शत्रुसेना ।
स्तंभनं कुरु २ स्वाहा । लक्षजपात्सिद्धिः ।।

उपरोक्त सेनास्तम्भनका मंत्र है, एक लाख जपनेसे मंत्र सिद्ध होता है ।

सेनापलायन

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकस्य पक्षकौ ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं तस्य नामसमन्वितम् ।। २८ ।।
गोरोचनैर्गले बद्ध्वा काकोलूकस्य पक्षकौ ।
सेनानीसम्मुखं गच्छेन्नान्यथा शंकरोदितम् ।। २९ ।।

मङ्गलवारके दिन कौआ और उल्लूके परोंसे भोजपत्रपर मंत्र लिख शत्रुके नामसे अभिमंत्रित कर कौआ और उल्लूके पर गलेमें बांध सेनाके सम्मुख जाय तो निश्चय सेना भाग जाती है ।। २८ ।। २९ ।।

शब्दमात्रे सैन्यमध्ये पलायन्ते सुनिश्चितम् ।
राजा प्रजा गजाद्याश्च नान्यथा शंकरोदितम् ।। ३० ।।

उपरोक्त प्रयोगका अनुष्ठान करके सेनामें जाय ललकारनेसे राजा प्रजा और हाथी आदि निश्चय भाग जाते हैं ।। ३० ।।

ओंनमो भयंकराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्य-
पलायनं कुरु २ स्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ।।

उपरोक्त सेनापलायनका मंत्र एक लाख जपनेसे सिद्ध होता है ।।

मनुष्यस्तंभन

ऋतुमत्या योनिवस्त्रे लिखेद्‌गोरोचनैर्नरम् ।
तन्नाम्ना प्रक्षिपेत्कुंभे नरस्तंभः प्रजायते ।। ३१ ।।

रजस्वला स्त्रीके योनिके वस्त्रपर गोरोचनसे मनुष्यका चित्र बनाय उसके नामसे अभिमंत्रित कर घडेमें बंद कर देनेसेमनुष्यका स्तंभन होजाता है ।। ३१ ।।

गोमहिष्यादिपशुस्तम्भन

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद् भूतले ध्रुवम् ।
तदा धेनुर्महिष्यादिपशुस्तम्भः प्रजायते ।। ३२ ।।

ऊंटकी हड्डीको जिस पशुके स्थानमें चारों ओर गाड दे तो भैस आदि पशुका स्तंभन होजाता है ।। ३२ ।।

मेघस्तम्भन

इष्टकासम्पुटं कृत्वा तस्मिन्मेघं समालिखेत् ।
श्मशानभस्मना स्थाप्यं भूमौ स्तम्भ प्रजायते ।। ३३ ।।

दो ईटोंको संपुट बनाय बीचमें चिताकी भस्मसे मेघ लिखकर भूमिमें गाड देनेसे मेघ स्तम्भित होता है ।। ३३ ।।

निद्रास्तम्भन

मधुना बृहतीमूलैरञ्जयेल्लोचनद्वयम् ।
निद्रास्तम्भो भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम् ।। ३४ ।।

कटेरीकी जडको शहदमें घिसकर दोनों नेत्रोंमें लगानेसे निद्रा स्तम्भित होजाती है ।। ३४ ।।

नौकास्तम्भन

भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पञ्चाङ्गुलं खनेत् ।
नौकामध्ये तदा नौकास्तम्भनं जायते ध्रुवम् ।। ३५ ।।

भरणीनक्षत्रमें गूलरकी लकडीकी पांच अंगुलकी कील बनाय नौकाकी पेंदीमें गाडनेसे नौका स्तम्भित होजाती है ।। ३५ ।।

गर्भस्तम्भन

पुष्यार्केण तु गृह्णीयात्कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
कट्यां बद्ध्वा गर्भिणीनां गर्भस्तम्भः प्रजायते ।। ३६ ।।

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्रमें काले धतूरेकी जडको लाय कमरमें बांधनेसे गर्भिणी स्त्रीका गर्भ नहीं गिरता है ।। ३६ ।।

तन्दुलीमूलकं चैव देयं तंदुलवारिणा ।
धत्तूरमूलचूर्णन्तु योनिस्थं गर्भधारणम् ।। ३७ ।।

चौलाईकी जडको चावलोंके पानीके साथ पीनेसे तथा धतूरेकी जड़का चर्ण पोटलीमें रख योनिमें धरनेसे गर्भ नहीं गिरता है ।। ३७ ।।

ललना शर्करा पाठा कुन्दश्च मधुनान्वितः ।
भक्षितो वारयत्थेव पतन्तं गर्भमञ्जसा ।। ३८ ।।

केशर, मिश्री, पाठा और कुंदको शहतके साथ खानेसे गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है ।। ३८ ।।

कुलाल पाणिसंलग्नः पंकः क्षौद्रसमन्वितः ।
अजाक्षीरेण संपीतो गर्भस्तम्भं करोत्यलम् ।। ३९ ।।

कुम्हारके हाथमें लगी हुई मट्टीमें शहत मिलाय बकरीके दूधके साथ पीनेसे गर्भ नहीं गिरता है ।। ३९ ।।

ओंनमो भगवते महारौद्राय गर्भस्तम्भनं कुरु
कुरु स्वाहा । लक्षजपात्सिद्धिः ।

उपरोक्त मन्त्र गर्भस्तंभनका है, एक लाख जपनेसे सिद्ध होता है । इस मन्त्रसे अभिमंत्रित करके जल पिलानेसे भी गर्भ नहीं गिरता है ।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे श्रीदत्तात्रेयेश्वरसंवादे स्तंभनकथनं
नाम चतुर्थः पटलः ।। ४ ।।

पंचम पटल

विद्वेषण

ईश्वर उवाच

विद्वेषं नरनारीणां विद्वेषं राजमन्त्रिणोः ।
महाकौतुकविद्वेषं शृणु सिद्धि प्रयत्नतः ।। १ ।।

शिवजी बोले—हे दत्तात्रेयजी ! पुरुष स्त्रियोंका विद्वेष, राजा और मंत्रियों का विद्वेष और महाकौतुककारी विद्वेषकी सिद्धिको यत्नसे सुनो ।। १ ।।

एकहस्ते काकपक्षमुल्लूपक्षं करेऽपरे ।
मंत्रयित्वा मिलत्यग्रे कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत् ।
यद्‌गृहे निखनेद्‌भूमौ विद्वेषतस्य जायते ।। २ ।।

एक हाथमें कौआका पंख और दूसरे हाथमें उल्लूके पंखको ले दोनोंके अग्रभागको मिलाये काले सूतसे लपेटकर जिसके घरमें गाडे उसको विद्वेष होता है ।। २ ।।

गृहीत्वा गजकेशं च गृहीत्वा सिंहकेशकम् ।
गृहीत्वा मृत्तिकां पादतलाद्धि निखनेद्‌भुवि ।। ३ ।।
तदुपरि स्थापयेदग्निं मालतीपुष्पं होमयेत् ।
विद्वेषं कुरुते तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ।। ४ ।।

हाथीके बाल और सिंहके बाल लेकर शत्रुके पैरके नीचेकी मट्टी ले पृथ्वीमें गाड़ दे । तिसके ऊपर अग्निको स्थापित कर मालताक फूलोंसे जिनके नामसे हवन करे उनमें विद्वेष हो जाता है ।। ३–४ ।।

मार्जारकमूषकयोर्विष्ठामादाय यत्नतः ।
विद्वेष्यपादतलतो मृदमादाय मिश्रयेत् ।। ५ ।।
जपेन्मन्त्रशतं कुर्यान्नर पुत्तलिकां शुभाम् ।
नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य तद्‌गृहे निखनेद्यदि ।
विद्वेषो जायते शीघ्रं पुत्रपित्रोरपि ध्रुवम् ।। ६ ।।

बिल्ली और चूहेकी विष्ठाको लेकर जिनमें वैर कराना हो उनके पैरतले की मट्टी लेकर मिलावे । फिर उस मट्टीको सौबार मन्त्रसे अभिमंत्रित कर मनुष्यके आकारकी पुतली बनावे फिर नीले कपडेसे पुतलीको लपेट घरमें माड देनेसे पुत्र और पितामें भी वैर हो जाता है ।। ५–६ ।।

चिताभस्मयुतं बभ्रु सर्पयोर्दन्तचूर्णकम् ।
पृथक् पुत्तलिकां कृत्वा तत्तन्नाम्नाभिमंत्रिताम् ।
उद्याने निखनेद्भूमौ विद्वेषो जायते ध्रुवम् ।। ७ ।।

चिताकी भस्ममें नीले और सर्पके दांतोंका चूर्ण मिलाय दो पुतली बनावे फिर जिनमें वैर कराना है उनके नामसे अभिमन्त्रित कर दोनों पुतलियोंको अलग २ बगीचेकी भूमिमें गाड दे तो दोनोंमें वैर हो जाता है ।। ७ ।।

गजकेसरिणोर्दन्तान्नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्ना हूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ।। ८ ।।

हाथी और सिहके दांतोंका चूर्ण मक्खनमें मिलाकर जिनके नामसे हवन किया जाय उनमें वैर होजाता है ।। ८ ।।

अश्वकेशं गृहीत्वा च माहिषकेशसंयुतम् ।
सभायां दीयते धूपो विद्वेषो जायते क्षणात् ।। ९ ।।

घोडे और भैंसेके बालोंकी जिनके नामसे सभामें धूप दे तो उनमें वैर होजाता है ।। ९ ।।

गृहीत्वा सल्लकीकण्टं निखनेद्भुवि द्वारके ।
कलहो जायते नित्यं तद्गृहे नात्र संशयः ।। १० ।।

सेहीके कांटेको लेकर जिसके द्वारपर गाडे तो उस घरमें निःसंदेह कलह होता है ।। १० ।।

यस्य कस्य भवेद्द्वेषो यावज्जीवं भवेत्तदा ।
तत्पादमृत्तिकायुक्तां शत्रुपांसुसमन्विताम् ।। ११ ।।
पुत्तली क्रियते सम्यक् श्मशाने निखनेद्भुवि ।
विद्वेषो जायते सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः ।। १२ ।।

जिस किसीमें जन्मभर वैर कराना हो तो उन दोनोंके पैरतलेकी मिट्टी को ले परस्परमें मिलाय दो पुतली बनाकर चिताकी भूमिमें पृथक् २ शत्रुके नामसे अभिमन्त्रित कर गाड देनेसे निश्चय इस सिद्धयोगसे विद्वेष होजाता है ।। ११ ।। १२ ।।

मंत्रः—ॐ नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह ।
विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ।।

उपरोक्त विद्वेषकारक मन्त्र एक लाख जपनेसे सिद्ध होजाता है ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे विद्वेषणप्रयोगो नाम पञ्चमः पटलः ।। ५ ।।

षष्ठ पटल

उच्चाटन

ईश्वर उवाच—

अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि उच्चाटनविधिं परम् ।
यस्य साधनमात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ।। १ ।।

शिवजी बोले—अब मैं उच्चाटनविधिको कहता हूं, जिसके साधन मात्रसे मनुष्योंका उच्चाटन होता है ।। १ ।।

येनाहृतं गृहं क्षेत्रं कलत्रं धनपुत्रकम् ।
उच्चाटनं वधं कुर्य्याच्छृणु योगीन्द्र यत्नतः ।। २ ।।

हे योगिराज ! (दत्तात्रेयजी) जिसने घर, खेत, स्त्री पुत्रादिका हरण किया हो उसका उच्चाटन और मारण करे (उसको) सुनो ।। २ ।।

ब्रह्मदण्डीं चिताभस्म शिवलिङ्गे प्रलेपयेत् ।
सिद्धार्थेन च संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे ।। ३ ।।
उच्चाटनं भवेत्तस्य स्त्रीपुत्रैर्बान्धवैस्सह ।
उच्चाटनं परं चैतन्नान्यथा मम भाषितम् ।। ४ ।।

ब्रह्मदण्डी, चिताकी भस्म और सरसों मिलाय शिवलिङ्गपर लेप कर शनैश्चरके दिन मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर जिसके घरमें डाले उसके स्त्री, पुत्र और कुटुम्बीजनोंके साथ उच्चाटन होजाता है यह शंकरका सत्य वचन है ।। ३–४ ।।

गृहीत्वा रासभीं धूलिं वामपादेन निश्चितम् ।
मध्याह्ने भौमवारे च यद्गृहे प्रक्षिपेन्नरः ।। ५ ।।
उच्चाटनं भवेत्तस्य जायते मरणान्तकम् ।
विना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ।। ६ ।।

जिस स्थानमें गदहा लेटा हो उस स्थानकी धूलको मंगलके दिन दुपहरके समय बाये पैरसे उठाकर जिसके घरमें फेंकी जाय उसका जीवनपर्यन्त उच्चाटन होता है यह विना मन्त्रके सिद्धि देनेवाला सिद्ध प्रयोग है ।। ५–६ ।।

सिद्धार्थाङ्घ्रिवनिर्माल्यं यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ।। ७ ।।

सरसों और शिवनिर्माल्यको ले मनुष्य जिसके घरमें गाड दे उसका उच्चाटन होता है उखाडा जाय तब वह मनुष्य सुखी होता है ।। ७ ।।

काकपक्षान् रवेर्वारे यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम् ।। ८ ।।

काकके पंखको रविवारके दिन लेकर मनुष्य जिसके घरमें गाड दे उसका निश्चय उच्चाटन होता है ।। ८ ।।

घूकपक्षं भौमवारे यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य विना मन्त्रेण सिद्ध्यति ।। ९ ।।

उल्लू पक्षीके पर मंगलके दिन लेकर जिसके घरमें मनुष्य गाड दे उसका उच्चाटन होता है यह विना ही मन्त्रके सिद्ध होता है ।। ९ ।।

घूकविष्ठां च संगृह्य सिद्धार्थेन समन्विताम् ।
यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ।। १० ।।

उल्लू पक्षीकी वीटमें सरसों मिलाय सुखाकर पीसले फिर उस चूर्णको जिसके अंगपर डाले उसका तत्काल उच्चाटन हो जाता है ।। १० ।।

गृहीत्वौदुम्बरं कीलं मंत्रेण चतुरंगुलम् ।
यस्य वै निखनेद्द्वारे स्यात्तस्योच्चाटनं ध्रुवम् ।। ११ ।।

चार अंगुलकी गूलरकी लकडी मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर जिसके दरवाजेपर गाढे उसका उच्चाटन होजाता है ।। ११ ।।

काकोलूकस्य पक्षाणि यस्य चुल्ल्यां खनेद्रवौ ।
यन्नाममन्त्रयोगेन स्यात्तस्योच्चाटनं ध्रुवम् ।। १२ ।।

कौआ और उल्लू पक्षीके परको रविवारके दिन जिसके चूल्हेमें मन्त्रसे अभिमंत्रित कर गाडे उसका उच्चाटन होता है ।। १२ ।।

नरास्थिकीलमादाय निखनेच्चतुरंगुलम् ।
मन्त्रयुक्तं रिपोर्द्वारे शीघ्रमुच्चाटनं भवेत् ।। १३ ।।

चार अंगुल मनुष्यके हड्डीकी कील मन्त्रसे अभिमंत्रितकर शत्रुके दरवाजेपर गाडनेसे शीघ्र ही उच्चाटन होजाता है ।। १३ ।।

ॐ नमो भगवते रुद्राय करालाय अमुकं
पुत्रबांधवैस्सह शीघ्रमुच्चाटय उच्चाटय स्वाहा
ठः ठः ठः । मन्त्रस्यायुतजपात्सिद्धिः ।।

'ओं नमो भगवते' से 'ठः ठः ठः' तक उच्चाटनका मन्त्र है यह विधानसे दश हजार जपनेपर सिद्ध हो जाता है ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे उच्चाटनप्रयोगो नाम षष्ठः पटलः ।। ५ ।।

सप्तम पटल

सर्वजनवशीकरण

ईश्वर उवाच

अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि वशीकरणमुत्तमम् ।
यत्प्रयोगाद्वशं यांति नरा नार्यश्च सर्वशः ।। १ ।।

शिवजी बोले—(हे दत्तात्रेयजी ! अब श्रेष्ठ वशीकरण प्रयोग वर्णन करता हूं जिसके करनेसे सम्पूर्ण नर नारी वशमें होजाते हैं ।। १ ।।

ब्रह्मदंडीवचाकुष्ठचूर्णं ताम्बूलमध्यतः ।
दापयेद्यं रवौ वारे स वश्यो वर्तते सदा ।। २ ।।

रविवारके दिन ब्रह्मदंडी, वच और कूटके चूर्णको पानमें रखकर जिसे दिलवा दे वह सदा वशीभूत रहता है ।। २ ।।

गृहीत्वा वटमूलं तु जलेन सह घर्षयेत् ।
विभूत्या संयुतं भाले तिलकं लोकवश्यकृत् ।। ३ ।।

बडकी जडको जलमें घिसकर विभूति मिलाय मस्तकमें तिलक लगानेसे मनुष्य सब जनोंको वशीभूत करता है ।। ३ ।।

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सम्भिमंत्रितम् ।
बद्ध्वा सर्वत्र पूज्योऽसौ सर्वलोकवशंकरः ।। ४ ।।

पुष्य नक्षत्रमें मन्त्रसे अभिमंत्रित कर पुनर्नवाकी जडको हाथमें बांधनेसे मनुष्य सर्वत्र पूजनीय होकर सबको वशीभूत करता है ।। ४ ।।

कपिलापयसा युक्तं पिष्ट्वापामार्गमूलकम् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा वशीकुर्य्याज्जगत्रयम् ।। ५ ।।

चिरचिटेकी जडको कपिला गौके दूधमें पीस मस्तकमें तिलक लगानेसे मनुष्य त्रिलोकीको वशीभूत करता है ।। ५ ।।

गृहीत्वा सहदेवीं च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
ताम्बूलेन तु तच्चूर्णं सर्वलोकवशंकरम् ।। ६ ।।

सहदेईको छायामें सुखाय चूर्णकर पानके साथ खिलानेसे सब जनोंको वश करता है ।। ६ ।।

रोचनासहदेवीभ्यां तिलको लोकवश्यकृत् ।। ७ ।।
गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकं चरेत् ।

गोरोचन और सहदेईका तिलक लगानेसे मनुष्य सब जनोंको वशीभूत करता है ।। ७ ।।

गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकं चरेत् ।
प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टमात्रो न संशयः ।। ८ ।।

गूलरकी जडका तिलक मस्तकमें लगानेसे मनुष्य देखते ही सबको प्रिय हो जाता है और पानमें रखकर गूलरकी जड सेवन करनेसे सबजनोंको वशीभूत करता है ।। ८ ।।

सिद्धार्थदेवदाल्योश्च गुटिकां कारयेद्बुधः ।
मुखे निक्षिप्य भाषेत सर्वलोकवशंकरम् ।। ९ ।।

सरसों और देवदालीकी गोली बनाय मुखमें रखकर भाषण करनेसे मनुष्य सब जनोंको वशीभूत करता है ।। ९ ।।

कुंकुमं नागरं कुष्ठं हरितालं मनःशिला ।
अनामिकाया रक्तेन तिलकं सर्ववश्यकृत् ।। १० ।।

केसर, सोंठ कूठ, हरताल और मनशिलमें अनामिका अंगुली का रक्त मिलाय मस्तकपर तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करता है ।। १० ।।

गोरोचनं पद्मपत्रे प्रियंगू रक्तचन्दनम् ।
एषां तु तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ।। ११ ।।

गोरोचन, कमलपत्र, कांगनी और लालचन्दनको मस्तकमें लगाकर मनुष्य सबको वश करता है ।। ११ ।।

गृहीत्वा श्वेतगुंजां च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
कपिलापयसा सार्द्धं तिलकं लोकवश्यकृत् ।। १२ ।।

सफेद घुंघुचीको छायामें सुखाय कपिला गौके दूधमें घिस तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशमें करता है ।। १२ ।।

श्वेतार्कं च गृहीत्वा च छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसा सार्द्धं तिलकं लोकवश्यकृत् ।। १३ ।।

सफेद आकको छायामें सुखाय कपिला गौके दूधके साथ घिस तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करता है ।। १३ ।।

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलादुग्धमिश्रिताम् ।
लेपमात्रे शरीराणां सर्वलोकवशंकरम् ।। १४ ।।

सफेद दूवको कपिला गौकेदूधमें मिलाय शरीरपर लेप करनेसे मनुष्य सबको वश करता है ।। १४ ।।

बिल्वपत्रं तु संग्राह्यं मातुलुंगं तथैव च ।
अजादुग्धेन तिलकं सर्वलोकवशंकरम् ।। १५ ।।

बेलकी पत्ती बिजौरा नींबूके रसमें पीस बकरीका दूध मिला तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करता है ।। १५ ।।

कुमारीमूलमादाय विजयाबीजसंयुतम् ।
तिलकं क्रियते भाले सर्वलोकवशंकरम् ।। १६ ।।

घीक्वारकी जड और भांगके बीजोंका तिलक बनाय मस्तकपर लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करता है ।। १६ ।।

हरितालं चाश्वगंधा सिंदूरं कदलीरसः ।
एषां तु तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ।। १७ ।।

हरताल, असगन्ध और सिन्दूरको केलेके रसमें मिला मस्तकपर तिलक लगानेसे मनुष्य सब जनोंको वश करता है ।। १७ ।।

आपामार्गस्य बीजानि च्छागदुग्धेन पेषयेत् ।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ।। १८ ।।

चिरचिटेके बीजोंको बकरीके दूधमें पीस उसका मस्तकपर तिलक लगानेसे मनुष्य सब-जनोंको वश करता है ।। १८ ।।

ताम्बूलं तुलसीपत्रं कपिलादुग्धपेषणम् ।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ।। १९ ।।

पान और तुलसीके पत्तोंको कपिला गौके दूधमें पीस मस्तकपर तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करता है ।। १९ ।।

ओं नमो नारायणाय सर्वलोकान्मम वशान्कुरु
कुरु स्वाहा (अस्य मन्त्रस्यायुतजपात्सिद्धिः)

'ओं नमो नारायणाय' से 'स्वाहा' तक सर्वजनवशीकरण मन्त्र है। दशहजार जपनेसे सिद्ध होता है–

इति श्रीदत्तात्रेयमंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे सर्वलोकवशीकरण
नाम सप्तम पटल ।। ७ ।।

अष्टम पटल

स्त्रीवशीकरण

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूर पुष्पकम् ।
शाखां लतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं तथैव च ।। १ ।।

महादेवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी !) रविवारके दिन काले धतूरेको पुष्प, लता, पत्ते और जड़सहित लावे ।। १ ।।

पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ।
तिलकः स्त्रीवशकरो यदि साक्षादरुन्धती ।। २ ।।

और उसमें कपूर, केशर एवं गोरोचन मिलाय तिलक बनाकर मस्तकपर लगावे तो अरुन्धतीके समान स्त्रीको भी वशीभूत करता है ।।२।।

काकजंघा वचा कुष्ठं शुक्रं शोणितमिश्रितम् ।
दत्ते तु भोजने बाला वशीकरणमद्भुतम् ।। ३ ।।

काकजंघा, वच और कूठको (चूर्णकर) अपने वीर्य और रक्तमें मिला जिस स्त्रीको भोजनमें दे तो अद्भुत वशीकरण होता है ।। ३ ।।

चिताभस्म वचा कुष्ठं रोचनाकुंकुमैः समम् ।
चूर्ण स्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ।। ४ ।।

१ काकजंघा (कौआटीडी) जडी होती है

चिताकी भस्म, वच, कूठ, गोरोचन और केंसरका समान भाग लेकर चूर्ण बनाय स्त्रीके शिरपर डालनेसे अद्भुत वशीकरण होता है ।। ४ ।।

भौमवारे लवङ्गं च लिङ्गच्छिद्रे विनिक्षिपेत् ।
बुधे निष्कास्य तांबूले दद्यात्सा वशगा भवेत् ।। ५ ।।

मंगलके दिन लौंगको लिंगके छिद्रमें रक्खे और बुधके दिन उसे निकाल पानमें रख जिस स्त्रीको खिलावे वह वशीभूत होजाती है ।। ५ ।।

करपादनखानां च भस्म तांबूलपत्रके ।
रविवारे प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ।। ६ ।।

हाथ पैरोंके नखोंकी भस्म बनाय पानमें रख रविवारके दिन जिस स्त्रीको दीजाय वही वशीभूत होजाती है ।। ६ ।।

जिह्वामलं दन्तमलं नासाकर्णमलं तथा ।
तांबूलेन प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ।। ७ ।।

जीभका मैल, दांतोंका मैल, नाकका मैल और कानके मैलको ले पानमें रख स्त्रीको देनेसे अद्भुत वशीकरण होता है ।। ७ ।।

घूकमांसं गृहीत्वा तु खाद्ये पेये प्रदापयेत् ।
सिद्धयोगो ह्ययं ज्ञेयो वशीकरणमद्भुतम् ।। ८ ।।

उल्लू पक्षीका मांस खिलानेसे पिलानेसे अद्भुत वशीकरण होता है इसको सिद्धयोग जानो ।। ८ ।।

वामपादतलात्पांसुं वनितायाः शनौ हरेत् ।
तस्य पुत्तलिकां कुर्य्यात्तस्यः केशान्नियोजयेत् ।।९।।
नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत् ।
सिंदूरेण सामायुक्तं निखनेद्द्वारदेशके ।। १० ।।
उल्लङ्घनाद्वशं याति प्राणैरपि धनैरपि ।
कृतज्ञः स्ववशं कुर्य्यान्मोदते च चिरं भुवि ।। ११ ।।

शनिके दिन स्त्रीके बायें पैरके तलेकी धूलि लेकर पुतली बनावे और उस स्त्रीके केश पुतलीके केशके स्थानपर लगावे । नीले कपडेमें लपेट उस पुतलीके भगमें अपना वीर्य डाले और मस्तकपर सिंदूर लगाय दरवाजे पर गाड़ दे । उस स्थानको लांघनेसे वह स्त्री धन और प्राणसे मनुष्यके वशीभूत हो जाती है, कृतज्ञ पुरुप ऐसे स्त्रीको वशकर चिरकालतक आनन्द भोगता है ।। ९–११ ।।

तांबलरसमध्ये च पिष्ट्वा तालं मनःशिलाम् ।
भौमे च तिलकं कृत्वा वशीकुर्याच्च योषितः ।। १२ ।।

मंगलके दिन पानके रसमें मनशिलको पीस तिलक लगानेसे मनुष्य स्त्रियोंको वशीभूत करता है ।। १२ ।।

गोरोचनं पद्मपत्रे लिखित्वा तिलकं कृतम् ।
शनिवारे कृते योगे वशीभवन्ति निश्चितम् ।। १३ ।।

शनिवारके दिन गोरोचनसे कमलके पत्तेपर स्त्रीका नाम लिख फिर उसीका तिलक लगानेसे निश्चय ही स्त्री वशीभूत होजाती है ।। १३ ।।

गृहीत्वा मालतीपुष्पं कृत्वा तु पटवर्तिकाम् ।
भृगुवारे नृकपाले एरंडतैलकज्जलम् ।। १४ ।।
अञ्जयेन्नेत्रयुगले दृष्टिमात्रे वशीभवेत् ।
विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यान्नान्यथा मम भाषितम् ।। १५ ।।

चमेलीके फूलको सूतके कपडेमें लपेट बत्ती बनाय अंडीके तेलमें शुक्रवारके दिन मनुष्यकी खोपडीके बीच दीपक जलाय काजल पारे फिर उस काजलको दोनों नेत्रोंमें आँजे तो उसके देखतेही स्त्रियें वशीभूत होजाती हैं, मेरा कहा यह सिद्ध प्रयोग है इसमें मन्त्रकी भी आवश्यकता नहीं है ।। १४ १५ ।।

ओं नमः कामाक्ष्यै देव्यै अमुकां मे वशं कुरु-
कुरु स्वाहा (सपादलक्ष जपात्सिद्धिर्भवति) ।।

'ओं नमः कामाक्ष्यैसे' 'स्वाहा' तक स्त्रीवशशीकरणका मन्त्र है सवालाख जपनेसे यह सिद्ध होता है ।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे स्त्रीवशीकरण
नामाष्टमः पटलः ।। ८ ।।

नवम पटल

पुरुषवशीकरण

गोरोचनं योनिरक्तं कदलीरससंयुतम् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा पतिं तु स्ववशं नयेत् ।। १ ।।

महादेवजी बोले– (हे दत्तात्रेयजी !) गोरोचन, योनिरक्त और केलेका रस मिलाय तिलक बनाकर लगानेसे स्त्री अपने पतिको वश करलेती है ।। १ ।।

पंचांगं दाडिमं पिष्ट्वा श्वेतसर्षपसयुतम् ।
योनिलेपे पतिं दासं करोत्येव च दुर्भगा ।। २ ।।

अनारके पंचांग और सफेद सरसोंको पीस योनिपर लेपकर दुर्भगा भी स्त्री अपने पतिको दास बना लेती है ।। २ ।।

गृहीत्वा मालतीपुष्पं कटुतैलेन पाचितम् ।
भगे यल्लेपयेन्नारी रतो मोहयते पतिम् ।। ३ ।।

चमेलीके फूलोंको कडुवे तेलमें पचाय जो स्त्रीसम्भोगसमयमें अपने काममन्दिरमें लेप करे तो वह अपने पतिको मोहित कर लेती है ।। ३ ।।

ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं मे वश्यं कुरु
कुरु स्वाहा । (अस्य लक्षजपात्सर्वसिद्धिः) ।

'ओं नमो महायक्षिण्यै' से 'स्वाहा' तक पति वशीकरणका मन्त्र है, यह लाख वार जप करनेसे सिद्ध होता है ।

राजवशीकरण

कुंकमं चन्दनं चैव कर्पूरस्तुलसीदलम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ।। ४ ।।

केशर, चन्दन, कपूर और तुलसीदलको गौके दुधमें पीस तिलक लगानेसे राजाको वश करता है ।। ४ ।।

हरितालं चाश्वगंधा कर्पूरश्च मनश्शिला ।
आजाक्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ।। ५ ।।

हरताल, असगन्ध, कपूर और मनशिलको वकरीके दूधमें मिलाय तिलक लगानेसे मनुष्य राजाको वशीभूत करता है ।। ५ ।।

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवर्तिकाम् ।
सिद्धार्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ।। ६ ।।

पातयेदंजनात्तस्मात्सर्वदा भुवनत्रये ।
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत् ।। ७ ।।

तालीस, कूट, तगर इनको पीस रेशमी वस्त्रमें लपेट बत्ती बनाय मनुष्यकी खोपडीमें सरसोंका तेल भर बत्ती जलाय कज्जल पारे । इस काजलको नेत्रोंमें लगानेसे जो कोई मनुष्य दृष्टिगोचर हो वही दासके समान वश हो जाता है ।। ६–७ ।।

करे सौदर्शनं मूलं बद्ध्वा राजप्रियो भवेत् ।
सिंहींमूलं हरेत्पुष्ये कटौ बद्ध्वा नृपप्रियः ।। ८ ।।

सुदर्शनकी जड़को हाथमें बांधनेसे राजाका प्रिय होता हैं । काकडासिंही की जड़को पुष्य नक्षत्रमें लाकर कमरमें बांधे तो राजा का प्यारा होता है ।। ८ ।।

हरत्सौदर्शनं मूलं पुष्यर्क्षे रविवासरे ।
कर्पूरं तुलसीपत्रं पिष्ट्वा तु वस्त्रलेपने ।। ९ ।।
विष्णुक्रान्तावीजतैले तस्य प्रज्वाल्य दीपकम् ।
कज्जलं पारयेद्रात्रौ शुचिपूर्वं समाहितः ।। १० ।।
कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे राजवश्यकरं परम् ।
चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोकस्य का कथा ।। ११ ।।

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्र होनेपर सुदर्शनकी जड़ लाय कपूर और तुलसीदलोंके साथ पीसकर वस्त्रपर लेपन करे । पीछे विष्णुक्रान्ताके बीजोंको तेलमें उसकी बत्ती बनाय दीपक जलाकर रात्रिमें कज्जल पारे उस काजलको नेत्रोंमें लगानेसे राजाको वश करता है इस काजलके प्रतापसे चक्रवर्ती राजा वशीभूत होजाता है औरकी बात ही क्या है ।। ९–११ ।।

भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्यक्रियां शुचिः ।
वने गत्वा ह्यपामार्गवृक्षं पश्येदुदङ्मुखः ।। १२ ।।
तत्र विप्रं समाहूय पूजां कृत्वा यथाविधि ।
कर्षमेकं सुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ।। १३ ।।
तस्य हस्तेन गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकम् ।
मौनेन स्वगृहे गच्छेत्कृत्वा बीजांस्तु निस्तुषान् ।। १४ ।।
रमेशं हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवेद्वशे ।। १५ ।।

मंगलवारी अमावास्याके दिन स्नान पूजन आदि नित्यकी क्रियाको कर वनमें जाय उत्तरको मुखकरके अपामार्गके वृक्षको देखे । और उस स्थानमें ब्राह्मणको बुलाय विधानसे उस वृक्षका पूजन करे । फिर पूजा

कराई सोलह मासे सुवर्ण ब्राह्मणको दे। उस ब्राह्मणके हाथसे आपामार्गके बीजोंको निकलवाय उन बीजोंको लेकर अपने घर मौन भावसे चला आवे फिर बीजोंकी बूसी निकाल दे रमेशका ध्यान कर किसी उपायसे यह राजाको खिला दे तो जीवनपर्यन्त राजा वशीभूत रहे ।।१२-१५।।

अपामार्गस्य बीजन्तु गहीत्वा पुष्यभास्करे ।
खाने पाने प्रदातव्यं राजवश्यकरं परम् ।। १६ ।।

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्र होनेपर अपामार्गके बीज लाय खानपानमें देनेसे राजा वश होता है ।। १६ ।।

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं
महीपतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा (एकलक्ष-
जपान्मन्त्रसिद्धिः) ।।

'ॐ नमो भास्कराय' से 'स्वाहा' तक राजवशीकरणका मन्त्र है। यह एक लाख जपनेसे सिद्ध किया जाता है।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे राजवश्यो नाम
नवमः पटलः ।। ९ ।।

दशम पटल

आकर्षण प्रयोग

ईश्वर उवाच

आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धं प्रयत्नतः ।
राज्ञः प्रजायाः सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ।। १ ।।

शिवजी बोले—(हे दत्तात्रेयजी!) अबसिद्ध आकर्षणकी विधिको कहता हूं तुम सावधानीसे सुनो जिससे राजा प्रजा आदि सबका सच्चा आकर्षण होता है ।। १ ।।

कृष्णधत्तूरपात्राणां रसे गोरोचनं युतम् ।
श्वेतचण्डाल लेखन्या भूर्जपत्रे लिखेत्ततः ।। २ ।।

मन्त्रनाम लिखेन्मध्ये तापयेत्खदिराग्निना ।

शतयोजनगो वापि शीघ्रमायाति नान्यथा ।। ३ ।।

काले धत्तूरेके पत्तोंके रसमें गोरोचन मिलाय सफेद कनेरकी कलमसे भोजपत्रपर मन्त्र लिखे । मन्त्रके बीच अमुकके स्थान में जिसका नाम लिखे और खैरकी आगसे तपावे तो सौयोजनतक पहुंचा हुआ मनुष्य भी शीघ्र आजाता है ।। २–३ ।।

नृकपाले लिखेन्मन्त्रं रोचनाकेशरैस्सह ।

तापयेत्खदिराङ्गारे त्रिसन्ध्यासु प्रयत्नतः ।

मन्त्रं जपेत्सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि ।। ४ ।।

मनुष्यकी खोपडीमें गोरोचन और केशरसे मन्त्रको लिख खैरके अंगारेसे तीनों संध्याओंमें तपावे और मन्त्रको जपे तो उर्वशी अप्सराको भी आकर्पित करलेगा ।। ४ ।।

ब्रह्मदण्डीं समादाय पुष्पार्के तां तु चूर्णयेत् ।

कामार्ता कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमाङ्गे विनिक्षिपेत् ।

पृष्ठतः सा समायाति नान्यथा मम भाषितम् ।। ५ ।।

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्र होनेपर ब्रह्मदंडीको लाकर चूर्णकरे और कामपीडित कामिनीके शिरपर वह चूर्ण डाले तो कामिनी पीछे २ चली आती है यह मेरा सत्यवचन जानो ।। ५ ।।

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं तु भूर्जके ।

यस्य नाम लिखेन्मध्ये मधुमध्ये च निक्षिपेत् ।। ६ ।।

तदा आकर्षणं याति सिद्धियोग उदाहृतः ।

यस्मै कस्मै न दातव्ये नान्यथा मम भाषितम् ।। ७ ।।

अनामिका उंगलीके रक्तसे भोज पत्र मन्त्रके बीच जिसका नाम लिख कर शहदमें डालदे, उसका आकर्षण होता है इस सिद्धियोगको जिस किसीको नहीं दे यह मेरा सत्य वचन है ।। ६–७।।

ॐ नमो आदित्यरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरु

कुरु स्वाहा (अयुतजपान्मन्त्रसिद्धिः)

'ओं नमो आदित्यसे' 'स्वाहा' तक आकर्षणका मन्त्र है यह दश हजार जपनेसे सिद्ध होता है ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे आकर्षणप्रयोगो नाम दशमः पटलः ।। १० ।।

एकादश पटल

इन्द्रजाल

ईश्वर उवाच

इन्द्रजालं विना रक्षा जायते न सुनिश्चितम् ।
रक्षामंत्रो महामन्त्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ।। १ ।।

शिवजी बोले–(हे दत्तात्रेयजी !) विना इन्द्रजालके जाने निश्चित रूपसे रक्षा नहीं होती है अतएव अब इन्द्राजाल और रक्षाके मन्त्र (कहता हूं) जो सब सिद्धियोंको देनेवाले हैं ।। १ ।।

ॐ नमो नारायणाय विश्वम्भराय इन्द्रजालकौतुकानि दर्शयदर्शय सिद्धि कुरुकुरु स्वाहा ।।
(एकलक्षजपान्मन्त्रसिद्धिः)

उपरोक्त इन्द्राजालका कौतुकादि दिखानेका मन्त्र है यह एक लक्ष जपनेसे सिद्ध होता है ।।

ॐ नमः परब्रह्मपरमात्मने मम शरीररक्षां कुरु कुरु स्वाहा (अयुतजपान्मन्त्रसिद्धिर्भवति ।)

उपरोक्त शरीरकी रक्षाका मन्त्र है यह दशहजार जपनेसे सिद्ध होता है

वेष्टितं घुणतालस्य पञ्चाङ्गैः कनकं तथा ।
दृष्टिमात्रादृष्टिबन्धं नान्यथा मम भाषितम् ।। २ ।।

घुणातालवृक्षके पञ्चांगका आर धतूरेके पञ्चांगको मिलाय (गलेमें बांधे) तो दृष्टिमात्र से दृष्टिवन्ध होता है यह मेरा सत्य वचन है ।। २ ।।

कार्पासबीजं सर्पास्ये भौमवारे च रोपयेत् ।
उद्भूतं बीज कार्पासं बालैरण्डस्य तैलके ।
तद्वर्तिं ज्वालयेद्रात्रौ सर्पवद्दृश्यते ध्रुवम् ।। ३ ।।

मंगलके दिन सर्पके मुख में कपासके बीज बोवे उससे जो कपास उत्पन्न हो उसकी बत्ती बनाय अंडीके तेलमें डाल रात्रिमें दीपक जलावे तो सर्पही सर्प दिखाई दें ।। ३ ।।

वृश्चिकस्य मुखे बीजं क्षिपेत्कार्पासिकं तथा ।
तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्रौ वृश्चिको भवति ध्रुवम् ।।
वर्तिशान्तिः प्रकर्तव्या महाकौतुकशामिका ।। ४ ।।

बीछूके मुखमें कपासके बीज बोदे, जब कपास उत्पन्न हो तब उसकी बत्ती बनाय रात्रिके समय दीपक जलावे तो बीछी हीं बीछी दृष्टि आवें बत्तीके निकालनेपर महाकौतुक शान्त होजाते हैं ।। ४ ।।

भौमे कार्पासबीजानि नकुलस्य मुखे क्षिपेत् ।
सन्ध्यायां ज्वालयेद्वर्तिं नकुलो दृश्यते ध्रुवम् ।। ५ ।।

मंगलके दिन कपासके बीजोंको नौलेके मुखमें छोडे फिर कपास होनेपर उसकी बत्ती बनाय संध्यासमय दीपकमें जलानेसे नौलेही नौले दीख पडते हैं ।। ५ ।।

उलूकस्य कपाले तु घृतदीपेन कज्जलम् ।
पारयित्वांजयेन्नेत्रे रात्रौ पठति पुस्तकम् ।। ६ ।।

उल्लू पक्षीकी खोपडीमें घीका दीपक जलाय काजल पारे फिर उस काजल को नेत्रोंमें लगानेसे रात्रिमें पुस्तक पढ सकता है ।। ६ ।।

चन्द्रे कार्पासबीजानि मार्जारस्य मुखे क्षिपेत् ।
तद्वर्तिं ज्वालयेद्रात्रौ मार्जारो दृश्यते ध्रुवम् ।। ७ ।।

सोमवारको बिल्लीके मुखमें कपासके बीज डाले फिर बत्ती बनाकर रात्रिमें दीपक जलानेसे बिल्ली ही बिल्ली दीखती हैं ।। ७ ।।

एवं यस्य मुखे क्षिप्तं तद्रूद्भवसुवर्तिकम् ।
दीपं प्रज्वालयेद्रात्रौ दृष्यते हि सुनिश्चितम् ।। ८ ।।

इस प्रकार जिसके मुखमें कपासके बीज बोवे फिर उसकी बत्ती बनाकर रात्रिमें जलावे तो वह निश्चय दृष्टि आता है ।। ८ ।।

ये च केचन जीवाश्च वर्तन्ते जगतीतले ।
क्षिप्त्वा मुखेऽकोलबीजं निक्षिपेत्पृथिवीतले ।। ९ ।।
तद्बीजं मुखेंमध्यस्थं त्रिलोहं वेष्टितं कुरु ।
तद्रूपी च भवेत्सद्यो नान्यथा मम भाषितम् ।। १० ।।

पृथिवीमें जितने जीव हैं उनमेंसे किसीके मुखमें अंकोलके बीजोंको भर पृथ्वी में गाड दे ।। उन बीजोंसे वृक्ष उत्पन्न हो उसके बीजोंको लोहेके त्रिकोण यन्त्रमें लपेटकर मुखमें रक्खे तो मनुष्य उसी जीवके समान अन्य पुरुषोंके दृष्टि आवे ।। ९।१० ।।

खञ्जरीटं सजीवन्तु गृहीत्वा फाल्गुने क्षिपेत् ।
पिञ्जरे रक्षयेत्तावद्यावद्भाद्रपदो भवेत् ।। ११ ।।
अदृश्या जायते सत्यं नेत्रेणापि न दृष्यते ।
करेण तु शिखा ग्राह्या रूप्ययन्त्रे च निक्षिपेत् ।। १२ ।।
गुटिका मुखमध्यस्था अदृश्यो भवति ध्रुवम् ।। १३ ।।

जीवित खंजन पक्षी को फाल्गुन के महीनेमें लेकर पिंजरेमें बन्द करे और भादों तक उसे रहने दे । भादोंके महीनेमें वह खंजन निश्चय नेत्रोंसे नहीं दीखेगा तब उसको हाथसे पकडकर उसकी चोटी उखाड ले और उस चोटीको चांदीमें मढाकर गुटका बनाय मुखमें रक्खे निश्चय अदृश्य होजाता है अर्थात् दूसरोंको नहीं दीखता है ।।–११ १३ ।।

अंकोलस्य तु बीजानि निक्षिप्य तैलमध्यतः ।
धूपं दत्त्वा तु तत्तैलं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।। १४ ।।
तडागे निक्षिपेत्पाद्मं बीजं तत्तैलसंयुतम् ।
तत्क्षणाज्जायते योगिस्तडागात्कमलोद्भव : ।। १५ ।।
तत्तैलमाम्रबीजे तु निक्षिपेद्बिन्दुमात्रतः ।
आम्रवृक्षस्तदुत्पन्नः क्षणमात्रात्फलान्वितः ।। १६ ।।

अंकोलके बीजोंको तेलमें डालदे फिर घूप दे तो वह तेल सिद्धिदायक होजाता है । कमलके बीजोंको तेलमें भिगोकर तलावमें डाल तो उसी समय कमलके फूल उत्पन्न होते हैं । यदि उस तेलको बून्द भर भी आमकी गुठलीपर डाल दिया जाय तो उसी समय फलसहित आमका वृक्ष उत्पन्न होजाता है । १४–१६ ।।

घूकविष्ठां गृहीत्वा त्वैरण्डतैलेन पेषयेत् ।
यस्यांगे निक्षिपेद्बिन्दुमदृश्यो जायते नरः ।। १७ ।।

उल्लूपक्षीकी बीटको अंडीके तेलमें मिलाय जिसके अंगपर बून्द भर डाल दिया जाय तो वह अदृश्य होजाता है ।। १७ ।।

मातुलुङ्गस्य बीजानां तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः ।
लेपयेत्ताम्रपात्रे तन्मध्याह्ने च विलोकयेत् ।। १८ ।।

बिजौरे नींबूके बीजोंका तेल यत्नसे निकाल ताम्रपत्रपर लगाय मध्याह्न कालके सूर्यके सामने रखकर देखे ।। १८ ।।

रथेन सह चाकाशे दृश्यते भास्करो ध्रुवम् ।
विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ।। १९ ।।

तो रथ सहित सूर्य भगवान् आकाशमें दिखारें पड़ेंगे । यह सिद्ध योग विना ही मन्त्रके सिद्धि देता है ।। १९ ।।

वाराहीकान्तिकामूलं सिद्धार्थस्नेहलेपितम् ।
मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबन्धं करोत्यलम् ।। २० ।।

वाराहीकंद और कटेलीकी जड़को सरसोंके तेलमें मिलाय जिसके मुखपर फेंके तो उसकी दृष्टि बंध जाती है ।। २० ।।

भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः ।
कृकलासंमुखे क्षिप्त्वा कंकवृक्षं च बंधयेत् ।। २१ ।।
मूत्रबंधो भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ।
विनामंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ।। २२ ।।

मंगलके दिन शत्रुके मूत्रस्थानकी मट्टी लेकर गिरगिटके मुखमें भर घतूरेके वृक्षसे बांधे दे तो उस शत्रुका मूत्र बन्द होजाता है जब

गिरगिटको खोल उसके मुखसे मिट्टी निकाले तब सुखी हो जाता है, यह सिद्ध योग विनाही मन्त्रसे सिद्धि देता है ।। २१ ।। २२ ।।

रविवारे सकृद्धन्याद्दीर्घतुंडी तदा निशि ।
ततः सोमे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमुत्रतः ।। २३ ।।
तच्चर्म्मणि क्षिपेच्छत्रुमूत्रबन्धनकारिका ।
उद्धृते च सुखी चैव सिद्धयोग उदाहृतः ।। २४ ।।

रविवारके दिन रात्रि समय एक ही बारमें छछून्दरको मारे सोमवारको शत्रुके मूत्रस्थानकी मिट्टी लाकर उस मारी हुई छछूंदरकीखालमें भरे तो शत्रुका मूत्र बन्द होजाता है (यदि उस खालमें मट्टी भरी हुई छछून्दर के लकडी मारे तो शत्रुको पीड़ा होने लगती है, मूत्र बन्द होनेसे कष्ट पाकर शत्रु मरजाता है) जब छछून्दरकी खालसे मिट्टी निकाल ली जाय तब सुखी होजाता है ।। २३ ।। २४ ।।

सिन्दूरं गंधकं तालं समं पिष्ट्वा मनःशिलाम् ।
धृते तल्लिप्तवस्त्रे तु ध्रुवमग्निश्च जायते ।। २५ ।।

सिंदूर, गन्धक, हरताल और मनशिलको समान ले पीस वस्त्रपर लेप करे तो वह वस्त्र निश्चय अग्निके समान दिखाई देगा ।। २५ ।।

श्वेताञ्जनं समादाय पुष्यागस्त्यरसेन च ।
पिष्ट्वा सप्तदिनं यावदष्टमेऽह्नि यथाविधि ।। २६ ।।
अञ्जनं चाञ्जयेन्नेत्रे दृश्यन्ते चाह्नि तारकाः ।। २७ ।।
कुक्कुटस्याण्डमादाय तच्छिद्रे पारदं क्षिपेत् ।
सन्मुखे भास्करं कृतवा आकाशं गच्छति ध्रुवम् ।। २८ ।।
विना मंत्रेण सिद्धिश्च सिद्धियोग उदाहृतः ।। २९ ।।

सफेद सुरमेको अगस्त्यके रसमें सात दिनतक घोटे आठवें दिन विधान-पूर्वक उस अञ्जनको आंखोंमें लगानेसे दिनमें तारे दृष्टि आते हैं। मुरगीके अंडेमें पारा भर सूर्यके सामने धरनेसे वह अंडा निश्चय आकाशको उडजाता है ।। यह सिद्धि योग विना ही मन्त्रसे सिद्धि देता है ।। २६–२९ ।।

अर्कक्षीरं वटक्षीरं क्षीरमौदुम्बरं तथा ।
गृहीत्वा पात्रके क्षिप्तं जलपूर्णं करोति च ।
दुग्धं सञ्जायते तत्र महाकौतुककौतुकम् ।। ३० ।।

आकका दूध, बरगदका दूध और गूलरका दूध लेकल पात्रमें डाले पीछे उस पात्रको जलसे भर दे तो उस जलका दूध ही दूध विहित होगा यह महाकौतुक है ।। ३० ।।

गृहीत्वा विजयाबीजं तत्तैलं तु समाहरेत् ।
तत्तैलमहिफेनञ्च विषं जातीफलं तथा ।। ३१ ।।
धत्तूरबीजचूर्णन्तु गृहीत्वा च समं समम् ।
नवनीतेन तैलेन सर्वमौषधपेषणम् ।। ३२ ।।
अष्टयामकृते तंत्रे महाकौतुककौतुकम् ।
तत्तैलबिन्दुमात्रेण लिंगलेपं च कारयेत् ।। ३३ ।।
भोगेच्छा सर्वदा तस्य दृढं दीर्घं भविष्यति ।। ३४ ।।

भांगके बीजोंका तेल निकाले उस तेलमें अफीम, विष, जायफल और धत्तूरेके बीजोंका चूर्ण समान भाग मिलाय मक्खन वा तेलसे सब औष-धियोंको आठ पहरतक खरल करे तो वह महाकौतुकरूप होजाता है उस तेलकी बूंद भी कामध्वजापर लगाई जाय तो भोगकी इच्छा सदा रहे एवं लिंग दृढ और दीर्घ होजायगा ।। ३१–३४ ।।

षण्मुखं मृत्तिकाभाण्डं गृहीत्वा रविवासरे ।
तस्य मध्ये स्थापयेत्तदर्ककीलं नवांगुलम् ।। ३५ ।।
श्वेतदूर्वासंयुतं हि चाश्वगन्धा मनःशिला ।
ताम्बूलसंयुतं कृत्वा तुलसीदलमेव च ।। ३६ ।।
अपामार्गस्य पत्रन्तु धात्रीपत्रं तथैव च ।
वटपत्रं तथा मध्ये घृतं मिष्टान्नदुग्धके ।। ३७ ।।
मुखं वस्त्रेण संवेष्टच निखनेत्तस्यमध्यके ।।
तस्योपरि भूर्जपत्रे यंत्रं पंचदशं लिखेत् ।। ३८ ।।
शलभाखुमृगाणां च श्रृगालानां तथैव हि ।
पशुपक्षिनराणाञ्च चौराणां कीलनं भवेत् ।। ३९ ।।

वसुन्धरा सस्यपूर्णा न विघ्नैः परिभूयते ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ।। ४० ।।

रविवारके दिन छःमुखकी मट्टीकी हांडी लाकर उसमें नौ अंगुलकी आकके वृक्षकी कील रक्खे और उसमें सफेद दूब, असगन्ध, मनशिल, पान, तुलसीका दल, अपामार्गके पत्ते, आँमलेके पत्ते, बरगदके पत्ते, घी, मीठा दूध डाले पीछे उस हाँडीके मुखमें वस्त्रसे लपेट धान्ययुक्त क्षेत्र (हरे भरे खेत) में जाकर गाड दे उसके उपर भोजपत्रपर पन्द्रहका यंत्र लिख कर स्थापित करे तो टीडी, मृग, मूषक, सियार तथा बनैले जीव जन्तु, पशु, पक्षी, मनुष्य, चोर आदिका कीलन उसी समय हो जाता है और वह भूमि (जिसमें हांडी गाडी है) धान्यसे परिपूर्ण होती है किसी प्रकार विघ्न नहीं होता यह प्रयोग प्रत्येक मनुष्यको नहीं देना चाहिये ३५–४० ।।

पुष्यार्के तु समानीय मूलं श्वेतार्कसम्भवम् ।
अंगुष्ट प्रमितां तस्य प्रतिमां तु प्रपूजयेत् ।। ४१ ।।
गणनाथस्वरूपन्तु भक्त्या रक्ताश्वमारजैः ।
कुसुमैश्चापिगन्धाद्यैर्हविष्याशी जितेन्द्रयः ।। ४२ ।।
पूजयेन्नाममंत्रैश्च तद्बीजानि नमोऽन्तकैः ।
यान्यान्प्रार्थयते कामानेकमासेन ताँल्लभेत् ।। ४३ ।।
प्रत्येककामसिद्ध्यर्थं मासमेकं प्रपूजयेत् ।
गणेशबीजमाह–ओं अन्तरिक्षाय स्वाहा ।
अनेन मंत्रेण पूजयेत् । ओं ह्रीं पूर्वदयां ओं
ह्रीं फट्स्वाहा ।। रक्ताश्वमारजपुष्पाणि
क्षौद्रयुतानि जुहुयात् । वांछितं ददाति ।
ॐ ह्रीं श्रीं मानसंसिद्धिकरीं ह्रीं नमः ।। अनेन मन
रक्तकुसुममेकं जप्त्वा नित्यं क्षिपेत् । ततो भग-
वती वरदा अष्टगुणानामेकं गुणं ददाति ।। ४४ ।।

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारको सफेद आककी जड़को अंगूठेके बराबर लाय उसकी प्रतिमा बनाय पूजन करे। फिर हविष्यान्न (खीर) खाय इंद्रियोंको जीत श्रीगणेशजीके स्वरूपका भक्तिके साथ लाल कनेरके फूल औरं चन्दनादिसे उन्हीके (गणेशजीके) बीजमत्रके अन्त 'नम:' शब्द युक्त करके पूजन करे और जिस कामनासे करे वह कामना मासमें पूर्ण होजायगी ।। प्रत्येक मनोरथकी सिद्धिके निमित्त एक मास पूजन करना चाहिये 'ओं अंतरिक्षाय स्वाहा' यह गणेशजीका बीजमंत्र है। 'ओं ह्लीं पूर्वदयां ओं ह्लीं फट् स्वाहा इनको पढ लाल कनेरके कूलोंकी हवनमें आहुति दे इस भांतिसे करनेपर देवता मनोरथ पूर्ण करते हैं। इसके अतिरिक्त "ह्लीं श्री मानसंसिद्धिकरीं ह्लीं, नम:" इस मन्त्रको पढकर प्रतिदिन हाथमें लाल फूल लेकर चढावे तो वर देने वाली भगवती आठ गुणोंमेंसे एक गुण देती है ।। ४२–४४ ।।

कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षवन्दाकं धारयेत्करे ।
वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं स्मृतम् ।। ४५ ।।

कृत्तिका नक्षत्रमें थूहरके बन्देको हाथमें बांधनेसे वाक्यसिद्धि होती है महा आश्चर्ययुक्त प्रयोग है ।। ४५ ।।

अनेन ग्राहयेत्स्वातीनक्षत्रे बदरीभवम् ।
वन्दाकं तत्करे धृत्वा यद्वस्तु प्रार्थ्यते जनैः ।। ४६ ।।
तत्क्षणात्प्राप्यते सर्वमत्र मन्त्रस्तु कथ्यते ।
ओं अन्तरिक्षाय स्वाहा ।। अनेनग्राहयेत् ।। ४७ ।।

स्वाती नक्षत्रमें पूर्वोक्त मन्त्रसे बेरके बंदेको लाकर हाथमें बांध जिस वस्तुको चाहे वह वस्तु उसको उसी समय प्राप्त हो जाती है 'ओं अंतरिक्षाय स्वाहा' इसी मंत्रसे बंदेको अभिमंत्रित करकें बांधे ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे श्रीदत्तात्रेयेश्वरसंवादे इन्द्र जालकौतुकदर्शनं नामैकादशः पटलः ११ ।।

द्वादश पटल

यक्षिणीसाधन

ईश्वर उवाच

श्रृणु सिद्धं महायोगिन्यक्षिणीमंत्रसाधनम् ।
यस्य साधनमात्रेण नृणां सर्वे मनोरथाः ।। १ ।।

शिवजी बोले–हे महायोगिन् ! (दत्तात्रेयजी) अब यक्षिणी साधनकी विधिको सुनो जिसके अनुष्ठानसे मनुष्योंके सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होते हैं ।। १।।

आषाढीपूर्णिमायां च कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ।
सितेज्ययोरमौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः ।। २ ।।
प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्विते ।
मासमात्रं प्रयोगं तु निर्विघ्नेन समाचरेत् ।। ३ ।।

आषाढके महीनेमें पूर्णमासीके दिन क्षौर आदि कराकर गुरु, शुक्रके उदयमें मनुष्य यक्षणी साधन करे ।। किसी आचार्यके मतसे चद्रमाके बलवान् होनेपर श्रावण वदी प्रतिपदासे यक्षिणी साधनका आरंभ करे और इस प्रयोगको एक मासमें विघ्नरहित समाप्त करे ।। २–३ ।।

निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ।
षोडशोपचारकैस्तु रुद्रपाठसमन्वितम् ।। ४ ।।

निर्जन स्थानमें बेलके वृक्षकी जडमें बैठकर शिवजीका षोडशोपचारसे रुद्रपाठके साथ पूजन करे ।। ४ ।।

त्र्यम्बकेत्यस्य मन्त्रस्य जपं पञ्चसहस्रकम् ।
दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ।। ५ ।।

'त्र्यंबकं यजामहे' इस मन्त्रका पांच हजार जप कर और प्रतिदिन कुबेर जीका पूजन करे ।। ५ ।।

यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रियबांधव ।
एकां मे वशगां नित्यं यक्षणीं कुरु ते नमः ।। ६ ।।
इति मंत्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ।। ७ ।।

शंकरजीके प्यारे बन्धु हे यक्षराज ! यमको प्रणाम हो आप कृपा करके एक यक्षिणीको मेरे अधीन कर दो । उपरोक्त छठा श्लोक कुबेरजी का मन्त्र है । इस मन्त्रको मौन धारणकर ब्रह्मचर्य के साथ एक सौ आठबार जप और दिनमें हविष्यान्नको भोजन करे ।। ६–७ ।।

अथ यक्षिण्यःकथ्यन्ते–१ महायक्षिणी २ सुरसुन्दरी ३ मनोहरी ४ कनकावती ५ कामेश्वरी ६ रतिकरी ७ पद्मिनी ८ नटी ९ अनुरागिणी १० विशाला ११ चन्द्रिका १२ लक्ष्मी १३ शोभना १४ मदना इन्हीं चौदह यक्षिणियोंका साधन इस ग्रन्थमें वर्णन किया ।

महायक्षिणीसाधन

रात्रेस्तु मध्यमे यामे विनिद्रो मितभोजनः ।
बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मंत्रमिमं सदा ।। ८ ।। मंत्रस्तु-
ओंह्रींक्लींऐंश्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः ।।

अर्द्धरात्रिमें निद्राको त्याग अल्प भोजन कर बेलके वृक्षकी जडमें आसन लगाय "ओं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः" इस मन्त्रको निरन्तर जपे ।। ८ ।।

इतिमंत्रस्य च जपं सहस्रत्रयसंमितम् ।
कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतंद्रितः ।। ९ ।।
मध्वामिषबलि तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः ।
नानारूपधरा तत्रागमिष्यति च यक्षणी ।। १० ।।

उपरोक्त मन्त्रको बेलके नीचे बैठ एक महीनेतक निद्राको त्याग तीन हजार मंत्र जपे । और मदिरा मांसकी बलि दे, बलिको पहिलेहीसे अपने समीप रख लेवे क्योंकि अनेक रूपोंको धारण कर वहाँपर यक्षिणी आवेगी ।। ९–१० ।।

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपेत्संसक्तमानसः ।
यस्मिन्दिनं बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ।। ११ ।।
तदा वरान्वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ।
चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दद्यान्न संशयः ।। १२ ।।

उस आई यक्षिणीको देख निर्भयतासे जप करता रहे जब वह बलिको ग्रहणकर वर देनेको तैय्यार हो तब जो जो इच्छा हो सो सो उससे मांगले, यक्षिणी प्रसन्न होकर निःसन्देह सब कुछ देती है ।। ११–१२ ।।

अशक्तस्तु द्विजैः कुर्य्यात्प्रयोगं सुरपूजितम् ।।
सहायानथ वा गृह्य ब्राह्मणैः साधयेद्व्रतम् ।। १३ ।।

यदि इसका अनुष्ठान करनेमें समर्थ न हो तो ब्राह्मणोंकी सहायतासे इसका साधन करो ।। १३ ।।

तिस्रः कुमारिका भोज्याः परमान्नेन नित्यशः ।। १४ ।।
सिद्धे धनादिके चैव सदा सत्कर्म चाचरेत् ।
कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा ।। १५ ।।

और प्रतिदिन उत्तम अन्नसे तीन कुमारियोंको भोजन करावे यक्षिणीके सिद्ध होनेपर जो धन मिले उसे सत्कार्यमें लगावे यदि असत्कार्यमें वह धन लगेगा तो सिद्धि जाती रहेगी ।। १४–१५ ।।

सुरसुन्दरीसाधन

ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा इति मंत्रः ।

पवित्रगृहं गत्वा पूजनं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्त्वा त्रिसंध्यं पूजयेत्त्रिसहस्रं नित्यं जपेत् मासाभ्यन्तरे आगतायै चन्दनोदकेनार्घो देयः ।। मातृभगिनी भार्य्याकृत्यं करोति । यदा माता भवति सिद्धद्रव्याणि ददाति । यदि भगिनी भवति तदा ह्यपूर्वं वस्त्रं ददाति । यदि भार्या भवति तर्हि सर्वैश्वर्यं सर्वेषां परिपूरयेत् । वर्जयेदन्यास्त्रिया सह शयनम् । अन्यथा विनश्यति ।। ६ ।।

ओं ह्लीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा' यह सुरसुंदरीका मन्त्र है । पवित्र स्थानमें जाय पूजन करे फिर गूगलकी धूप दे तीनों संध्यांओंमें पूजनकर प्रतिदिन तीन हजार मन्त्रका जप करे तो एक मासके भीतरही सुंरसुंदरी आती हैं. आनेके समय जलमें चन्दन मिलाय उस जलसे अर्घ्य दे । माता, बहिन और स्त्री इन तीन रीतिसे वह साधकके संग रहती है । माता बनकर रहनेसे सिद्ध द्रव्य देती है । बहन बनकर रहनेसे वह अपूर्व वस्त्र देती है और स्त्री बनकर रहनेसे सब प्रकारके ऐश्वर्य देकर साधकका मनोरथ पूर्ण करती है । जब स्त्री बनकर रहे तब साधक अन्य स्त्रीके साथ शयन न करे करनेसे मर जाता है ।। १६ ।।

मनोहरीसाधन

नदीसंगमे गत्वा चन्दनेन मंडलं कृत्वा अगरुधूपं दत्त्वा मासोपरि आगतां पूजयेत् । यदा आगच्छति तदा चन्दनेनार्घो देयः । पुष्पफलैरेकचित्तेनार्चनं कर्त्तव्यम् । अर्द्धरात्रे नियतमागच्छति । आगतायां सत्यामाज्ञां देहि सुवर्णशतं च प्रतिदिनं ददाति ।। ओं आगच्छतु मनोहरि स्वाहा ।। मंत्रः ।। १७ ।।

मनोहरी यक्षिणीके साधन करनेके लिये नदीके संगममें जाय चन्दनसे मंडल बनाकर अगरुकी धूप दे महीनेके उपरान्त यक्षिणीके आनेके लिये पूजन करे । जब आवे तब चन्दनका अर्घ दे पुष्प फलादिद्वारा एकाग्र मनसे पूजन करे । आधीरातके समय सुरसुन्दरी आती है आने पर सत्य आज्ञा दे तो प्रसन्न होकर प्रतिदिन सौ सुवर्णमुद्रा देती है । इसका मंत्र मूलमें स्पष्ट लिखा है ।। १७ ।।

कनकावतीसाधन

ओं ह्लीं कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा ।। मंत्रः ।।

वटवृक्षतलं गत्वा मद्यं मांसं च दापयेत् । एकसहस्रमन्त्रान् जपेत् । एवं सप्तदिनं कुर्यात् । अष्टमरात्रौ सा सर्वालंकारयुता आगच्छति । साधकस्य भार्या भवति । द्वादशजनानां वस्त्रालंकारभोजनानि ददाति ।। १८ ।।

'ओं कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा' यह कनकावतीका मंत्र है बरगदके वृक्षके नीचे जाय मद्य मांसकी बलि दे और एक हजार मंत्र सात दिन तक जपे। आठवें दिनकी रात्रिमें संपूर्ण अलंकारोंसे युक्त हो कनकावती आती है। और साधककी भार्या होजाती है। बारह मनुष्योंको वस्त्र आभूषण और भोजन देती है ।। १८ ।।

कामेश्वरीसाधन

ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा । इति मन्त्रः ।

भूर्जपत्रे गोरोचनेन प्रतिमां विलिख्य तां देवीं पूजयेत् । शय्यामारुह्य एकाकी सहस्रं जपेत् । मासान्तं वा पूजयेत् घृतदीपो देयः । पश्चान्मौनी भूत्वा पूजयेत् । ततोऽर्द्धरात्रे नियतमागच्छति । साधकस्य भार्या भवति । प्रति दिनं शयने दिव्यालङ्कारान् परित्यज्य गच्छति । परस्त्री परिवर्जनीया इति ।। १९ ।।

'ओं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा' यह कामेश्वरी यक्षिणीका मन्त्र है। भोजपत्रपर गोरोचनसे प्रतिमा लिख यक्षिणीका पूजन करे, शय्यापर विराजमान होकर एक हजार मन्त्र महीनेभरतक जपे और पूजन करे, घृतका दीपक बाले फिर मौन धारण कर पूजन करे अनन्तर आधी रातके समय कामेश्वरी आती है। और साधककी भार्या होजाती है एवं प्रतिदिन शयन करके दिव्य अलंकारोंको छोडकर चली जाती है, इस दिशामें साधक अन्य स्त्रीको त्याग दे ।। १९ ।।

रतिप्रियासाधन

ॐ आगच्छ रतिप्रिये स्वाहा । इति मन्त्रः

पटे चित्ररूपिणीं लिखित्वा कनकवस्त्रांसर्वालंकारभूषिताम् उत्पलहस्तां कुमारीं जातीफलेन पूजयेत् । यदि भगिनी भवति तदा योजनमात्रास्त्रियमानीय समर्पयति वस्त्रालंकारभोजनानि ददाति ।। २० ।।

'ओं आगच्छ रतिप्रिये स्वाहा' यह रतिप्रिया यक्षिणीका मन्त्र है। कपडेपर देवीका चित्र लिख पीतवस्त्र एवं सम्पूर्ण अलंकारोंसे अलंकृत कर कमल हाथमें धारे हुए कुमारीका पूजन कर जायफल निवेदन करे जो भगिनी होजावें तो ४ कोशसे स्त्रीको लाकर दें एवं वस्त्रालंकार भोजन देती है ।। २० ।।

पद्मिनी नटी, और अनुरागिणियोंका साधन

१ ॐ ह्लीं आगच्छ पद्मिनि स्वाहा। २ ॐ ह्लीं आगच्छ नटि स्वाहा। ४ ॐ ह्लीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा। मन्त्रा एते कुंकुमेन भूर्ज पत्रे प्रतिमां विलिख्य गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपविधिना सम्पूज्य त्रिसंध्यं त्रिसहस्रं जपेत् मासमेकं यावत्। ततः पूर्णिमायां विधिवत् पूजा कर्त्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत् । सकलरात्रिपर्यन्तं जपेत्। अत्र केवलं मन्त्रभेदः । प्रभाते नियतसमये आगच्छति दिव्यरसायनं ददाति ।। २१ ।।

'ओं ह्लीं आगच्छ पद्मिनि स्वाहा' यह पद्मिनी यक्षिणीका मन्त्र-है। 'ओं ह्लीं आगच्छ नटि स्वाहा' यह नटी यक्षिणीका मन्त्र है। 'ओं ह्लीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा' यह अनुरागिणी यक्षिणीका मंत्र है।

उपरोक्त तीनों यक्षिणियोंको साधनकी एकही रीति है, केशरसे भोजपत्रपर प्रतिमा लिख गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपसे भलीभांति पूजन कर तीनों संध्याओंमें तीन हजार मन्त्र जपे, एक मास तक ऐसे ही प्रतिदिन पूजन करे। फिर पूर्णिमाके दिन घृतका दीपक बाल विधानसे पूजा करे और सारी रात निद्राको त्याग मन्त्र जपे प्रभात समय साधकके समीप यक्षिणी आती और दिव्य रसायन देती है।

विशालासाधन

ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा। मन्त्रः।
चिञ्चावृक्षतले लक्षं मन्त्रमावर्तयेच्छुचिः ।
शतपुष्पोद्भवैः पुष्पैः सघृतैर्होममाचरेत् ।।
विशाला च ततस्तुष्टा दत्ते दिव्यं रसायनम् ।। २२ ।।

'ओं ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा' यह विशाला यक्षिणीका मंत्र है। इमलीके पेडतले बैठकर पवित्रताके साथ एक लक्ष मन्त्र जपे फिर इमली वा सौंफके फूलोंको घृतमें मिलाय उनसे हवन करे तो विशाला यक्षिणी प्रसन्न होकर साधकको दिव्य रसायन देती है ।। २२ ।।

चन्द्रिकासाधन

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा । इति मंत्रः

शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावत्संदृश्यते विधुः ।
प्रतिपत्पूर्वपूर्णान्तं नवलक्षमिदं जपेत् ।
अमृतं चन्द्रिकादत्तं पीत्वा जीवोऽमरो भवेत् ।। २४ ।।

'ओं ह्रीं' चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा' यह चन्द्रिका यक्षिणीका मन्त्र है। शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे जपका आरम्भ करे और जबतक चन्द्र दीखे तबतक मंत्र जपकर पूर्णमासीतक नौ लाख मंत्र जपे तो चन्द्रिका यक्षिणी प्रसन्न होकर साधकको अमृत देती है उस अमृतको पीनेसे साधक अमर होजाता है ।। २३ ।।

लक्ष्मीसाधन

ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणीं कलहंसि स्वाहा ।

स्वगृहे संस्थितो रक्तैः करवीरप्रसूनकैः ।
लक्षमावर्तयेन्मन्त्रं होमं कुर्याद्दशांशतः ।। २४ ।।

होमे कृते भवेत्सिद्धा लक्ष्मीनाम्नी च यक्षिणी ।
रसं रसायनं दिव्यं विधानञ्च प्रयच्छति ।। २५ ।।

'ओं ऐं लक्ष्मी श्रीं' से 'स्वाहा' तक लक्ष्मी यक्षिणीका मंत्र है। अपने घरमें बैठकर लाल कनेरके फूलोंसे पूजन करे और एक लाख मंत्रोंका जप दशांश हवन करे ऐसा करनेसे लक्ष्मी सिद्ध होकर साधकको दिव्य रसायन देती है २४–२५ ।।

शोभनासाधन

ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभनीं श्रीं क्षः
स्वाहा । रक्तमालाम्बरो मन्त्रं चतुर्दशदिनैर्जपेत् ।
ततः सिद्धा भवेद्देवी शोभना भोगदायिनी ।। २६ ।।

'ओं अशोक' से 'स्वाहा' तक शोभना यक्षिणीका मन्त्र है। लाल-रंगके वस्त्रोंको धारण कर लालवर्णकी मालासे चतुर्दशीके दिन मन्त्र जपनेसे शोभना देवी प्रसन्न होकर साधकको भोग देती है ।। २६ ।।

मदनसाधन

ॐ ऐं मदने मदनविद्रावणे अनंगसंगमे देहि
देहि क्रीं क्रीं स्वाहा ।।
लक्षसंख्यं जपेन्मन्त्रं राजद्वारे शुचिः स्थिरः ।
सक्षीरैर्मालतीपुष्पैर्घृतहोमो दशांशतः ।।
मदना यक्षिणी सिद्धा गुटिकां संप्रयच्छति ।
तया मुखस्थयादृश्यश्चिरस्थायी भवेन्नरः ।। २७ ।।

'ओं ऐं मदने' से 'स्वाहा' तक मदना यक्षिणीका मन्त्र है। पवित्रता से स्थिरचित्त होकर राजद्वारमें एक लाख मन्त्र ज़पे और चमेलीके फूल दूध एवं घृतसे दशांश हवन करे तो मदना यक्षिणी सिद्ध होकर गुटिका देती है। उसको मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य और चिर-स्थायी होता है ।। २७ ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रेदत्तात्रेयेश्वरसंवादे यक्षिणीसाधन-
प्रयोगो नाम द्वादशः पटलः ।। १२ ।।

त्रयोदश पटल

रसायन

ईश्वर उवाच

अथाग्रे कथयिष्यामि रसायनविधिं वरम् ।
कुबेरतुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि ।। १ ।।

शिवजी बोले—(हे दत्तात्रेयजी !) अब रसायनकी उत्तम विधिको वर्णन करूँगा जिसके साधन करनेसे मनुष्य सिद्ध होकर कुबेरजीके समान हो जाता है ।। १ ।।

गोमूत्रं हरितालं च गंधकं च मनःशिलाम् ।
समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु कारयेत् ।। २ ।।

गोमूत्र, हरताल, गन्धक, मनशिल इनको लाकर जबतक सूखे नहीं खरल करे ।। २ ।।

गोमूत्रं रक्तवर्णाया गंधकं रक्तवर्णकम् ।
एकादशदिनं यावद्रक्ष्यं यत्नेन वै शुचि ।। ३ ।।

उपरोक्त प्रयोगमें लालवर्णकी गौका मूत्र और लालरंगका हरताल ले और ग्यारह दिनतक पवित्रतासे यत्नके साथ उसे घोटे ।। ३ ।।

गोलं कृत्वा द्वादशेऽह्नि रक्तवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
चतुरंगुलमानेन मृदं लिप्त्वा विशोषयेत् ।। ४ ।।

बारहवें दिन गोला बनाकर लाल वस्त्रसे लपेट उसपर चार अंगुल मट्टीका लेप सुखावे ।। ४ ।।

पंचहस्तप्रमाणेन भूमौ गर्तं तु कारयेत् ।
पलाशकाष्ठलोष्टैस्तु पूरयेद् द्रव्यमध्यगम् ।। ५ ।।

और पांच हाथ गहरा एक कुंड पृथ्वीमें खोदे उसमें ढाककी लकडी जलावे उसीके बीचमें इस गोलाको रक्खे ।। ५ ।।

अग्निं दद्यात्प्रयत्नेन स्वांगशीतं समुद्धरेत् ।

ताम्रपत्रे सुसन्तप्ते तद्भस्म तु प्रदापयेत् ।। ६ ।।

फिर सावधानीसे आंच जलकर शीतल होजाय तब गोलेको निकाल तपावे हुए तांबेके पत्रेपर उस गोलेकी भस्म डाले ।। ६ ।।

गुंजैकं तत्क्षणात्स्वर्णं जायते ताम्रपत्रकम् ।

अरण्ये निर्जने देशे शिवालयसमीपतः ।। ७ ।।

वनमें वा निर्जन स्थानमें अथवा शिवालयके समीप इस क्रियाको करनेसे घुंघुचीके बराबर ताम्रपत्र उसी समय सुवर्ण होजाता है ।। ७ ।।

शुक्लपक्षे सुचन्द्रेऽह्नि प्रयोगं साधयेत्सुधीः ।

त्र्यम्बकेति च मंत्रस्य जपं दशसहस्रकम् ।। ८ ।।

शुक्लपक्षमें जिस दिन चन्द्र बलवान् हो उसी दिन बुद्धिमान् पुरुष 'त्र्यंबकम् मन्त्रका दशहजार जप कराय इस प्रयोगका आरंभ करे ।।८।।

प्रत्यहं कारयेद्विप्रान्भोजयेद्रुद्रसम्मितान् ।

यावत्सिद्धिर्न जायेत तावदेतत्समाचरेत् ।। ९ ।।

जबतक सिद्धि प्राप्त न हो तबतक ग्यारह ब्राह्मणोंको प्रतिदिन भोजन करावे ।। ९ ।।

द्रव्यमर्द्दनमंत्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादीनामीशाय रसायनस्य सिद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा । प्रतिदिनं मर्द्दनसमये अयुतजपात्सिद्धिः ।। १० ।।

उपरोक्त मर्द्दनमन्त्रको पढता हुआ खरलमें रसायनकी सामग्री डालकर घोटे । दश हजार जपनेसे यन्त्र मन्त्र सिद्ध होता है ।। १० ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे रसायनविधिवर्णनं नाम त्रयोदशः पलटः ।। १३ ।।

चतुर्दश पटल

कालज्ञान

ईश्वर उवाच

अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि कालज्ञानविनिर्णयम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण कालज्ञानं विधीयते ।। १ ।।

महादेवजी बोले-(हे दत्तात्रेयजी !) अब मैं कालज्ञानका वर्णन करूंगा जिसके ज्ञान होनेसे कालके ज्ञानको जान लेता है ।। १ ।।

न दृष्टा नासिका येन नेत्रं च समलायते ।
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ।। २ ।।

जिसको अपनी नासिका और नेत्र न दीख पड़े वह छः महीनेमें मर जाता है ।। २ ।।

न दृष्टारुन्धती येन सप्तर्षीणां च मध्यतः ।
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युर्यदि रक्षति चेश्वरः ।। ३ ।।

जिसको आकाशमंडलमें सप्तर्षियोंके बीच अरुन्धतीका तारा न दीखे उसकी भगवान्से रक्षा पानेपर भी छह मासके बीचमें ही मृत्यु होजाती है ।। ३ ।।

स्नानकालस्य समये मृत्युज्ञानं निरीक्ष्यते ।
उरः शुष्कं भवेद्यस्य षण्मासाभ्यन्तरे मृतिः ।। ४ ।।

स्नान करनेके समय यदि हृदय सूखजाय तो जान लो कि छः महीनेके बीचमें मृत्यु होगी ।। ४ ।।

रात्रौ चन्द्रो दिवा सूर्यो मासमेकं निरन्तरम् ।
भवेन्मृत्युश्चनु स्तस्य मासाभ्यन्तरे ध्रुवम् ।। ५ ।।

रात्रिमें चन्द्र (वामस्वर) और दिनमें सूर्य (दक्षिणस्वर) एक महीनेतक निरन्तर चले तो ६ महीनेके भीतर ही मृत्यु होजाती है ।। ५ ।।

सम्पूर्ण वहते सूर्यः सोमश्चैव न दृश्यते ।
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञैः परिभाषितम् ।। ६ ।।

जो दिनरात दहना स्वर चले और बाँया न चले तो १५ दिनमें उसकी मृत्यु होजाती है ऐसा कालके जाननेवालोंने कहा है ।। ६ ।।

मांस चैव तु षण्मासं पक्षं चैव त्रिमासकम् ।
पंचरात्रं वहेच्चैकस्तस्य मृत्युर्न संशयः ।। ७ ।।

जिसका एक स्वर महीने, ३ महीने १५ दिन या ५ रात्रि भी निरन्तर चले तो उसकी मृत्यु जानो ।। ७ ।।

शुक्लपक्षे वहेद्वामं कृष्णपक्षे च दक्षिणम् ।
उभयोश्च त्रिदिवसान्दृश्येते चन्द्रसूर्यकौ ।। ८ ।।

शुक्लपक्षमें बांया और कृष्णपक्षमें दहना स्वर एवं दोनों पक्षोंमें दोनों स्वर तीन तीन दिन चलते है ।। ८ ।।

पंचभूतात्मकं दीपं चन्द्रस्नेहेन पूरितम् ।
रक्षेच्च सूर्य्यवातेन तेन जीवः स्थिरो भवेत् ।। ९ ।।

इस पंचतत्त्वात्मक शरीररूपी दीपकमें तेलरूपी चंद्रस्वर (वामनाडी) है सूर्यरूपी दक्षिणस्वर वायुसे दीपककी रक्षा करता है जिसमें यह जीव अचल रहे ।। ९ ।।

आत्मा दीपः सूर्यज्योतिरायुः स्नेहकालात्मकः ।
कालकज्जलसंसारे वृत्तिरेबा तनोर्मता ।। १० ।।

यह आत्मारूपी दीपकमें सूर्यरूपी ज्योति आयुरूपी तेलसे पूर्ण है सो इसमें कायारूपी काजल पड़ता है मनुष्योंकी वृत्तिके समान देहकी वृत्ति जानो ।। १० ।।

बुद्धिज्ञानक्रियाहीनो विपरीतस्तु जायते ।
द्विमासेन भवेन्मृत्युर्नेत्रभ्रमणकष्टतः ।। ११ ।।

बुद्धि, ज्ञान, क्रियाकी हीनता और विपरीतता होनेसे और नेत्रोंके चलानेमें कष्टका अनुभव होनेसे दो मासमें मृत्यु होती है ।। ११ ।।

शशांकं चारयेद्रात्रौ दिवा पश्येद्दिवाकरम् ।
इत्यभ्यासरतो नित्यं स योगी नात्र संशयः ।। १२ ।।

जो वास्तवमें योगी है वह रात्रिमें बांया और दिन में दहने स्वर चलानेका अभ्यास करलेते हैं ।। १२ ।।

गतौ च पादचलनं खंडितं खंडितं पदम् ।
मासेन मृत्युमाप्नोति ह्यर्धपक्षे विशेषतः ।। १३ ।।

चलते समय पैर अटपटे पड़ें एवं धूलमें सने दीख पड़ें तो एक मासमें निश्चय मृत्यु होजाती है ।। १३ ।।

द्वादशदलचक्रस्थं मृत्युकालं च वीक्षयेत् ।
चैत्रादिमाससंख्याश्च लिखेद्द्वादशके दले ।। १४ ।।

मेषादिराशयः स्थाप्याः सूर्याद्याश्च ग्रहास्तथा ।
जन्मर्क्षं जन्मराशिश्च वीक्ष्यतां मृत्युकालकः ।। १५ ।।

१२ दलका एक चक्र बनाय उसमें मृत्युके समयको देखे, चैत्रादि १२ महीनोंको चक्रके १२ दलोंमें लिखे । फिर मेषादि १२ राशि-योंको स्थापन कर नवग्रहोंको स्थापित करे। पीछे उसमें जन्मकी राशि और जन्मके नक्षत्रको मृत्युकालचक्रमें देखे ।। १४–१५ ।।

शनिभौमौ राहुकेतू राशिवेधे तु कष्टता ।
ऋक्षविद्धे राशिविद्धे मासे मृत्युर्भविष्यति ।। १६ ।।

शनि, मङ्गल, राहु, केतुसे राशिका वेध होनेपर कष्ट होता है, नक्षत्रका वेध और राशिका वेध होनेसे एक महीनेमें मृत्यु होती है ।।१६।।

सूर्यविद्धे मनस्तापो बुधे सौख्यं प्रवर्त्तते ।
जीवे च तीर्थयात्रा स्याच्चन्द्रे स्त्रीसुखसंपदः ।। १७ ।।

सूर्यके वेधसे मनको ताप, बुधके वेधसे सुख, गुरुके वेधसे तीर्थयात्रा और चन्द्रके वेधसे स्त्री एवं सुखसम्पत्ति प्राप्त होती है ।। १७ ।।

अहोरात्रं यदेकस्य वहनं मरुतो भवेत् ।
तदा तस्य भवेत्त्वायुः सम्पूर्णं वत्सरत्रयम् ।। १८ ।।

यदि अहोरात्र एक ही स्वर चले तो मनुष्यकी आयु तीन वर्षकी रह जाती है ।। १८ ।।

अहोरात्रंद्वयं शश्वत्पिंगलायाः सदागतिः ।
तस्य वर्षद्वयं प्रोक्तं जीवितं तत्त्ववेदिभिः ।। १९ ।।
त्रिरात्रं वहते यस्य वायुरेकपुटे स्थितः ।
संवत्सरं तदा चायुः प्रवदन्ति मुनीश्वराः ।। २० ।।

जिसकी दो रातदिन पिंगला नाडी चले तत्त्व जाननेवालोंने उसकी दो वर्षकी आयु कही है । जिसका तीन रात्रितक एकही स्वर चले उसकी मुनिवरोंने एक वर्षकी आयु कही है ।। १९–२० ।।

छायां विधोर्न ध्रुवमृक्षमालामालोकयेद्यो न
च मातृचक्रम् । खण्डं पदं यस्य तु कर्दमादौ
कफश्च्युतो मज्जति चाम्बुचुम्बी ।। २१ ।।

जिसे चन्द्रकी छाया, ध्रुव, तारा, नक्षत्रमाला, मातृमंडल न दीखे कीच आदिमें पैर धरनेसे खंडित जानपडे और कफ जलमें गिरनेसे नीचे बैठ जाय तो उसे अरिष्ट जानो ।। २१ ।।

अतीव तुच्छं बहु चाल्पहेतोरतीतसात्म्यः
सदसत्प्रवृत्तौ । अप्यंगुलक्रान्तविलोचनान्तो
न मेचकं चान्द्रकमीक्षते यः ।। २२ ।।

जो सहसा कम अधिक भोजन करने लगे, अच्छे वा बुरे काममें प्रवृत्त होजाय, और नेत्रोंको मूंदनेपर जिसे चन्द्रिका समेत तिलयुक्त अनुभव सिद्ध मोर न दीखे उसे अनिष्ट जानो ।। २२ ।।

अक्षैर्लक्षितलक्षणे च पयसि सूर्येन्दुबिम्बे तथा
प्राचीदक्षिणपश्चिमोत्तरदिशां षड्द्वित्रिमासैककम् ।
छिद्रं पश्यति चेत्तदा दशदिनं धूम्राकृतिं पश्चिमे
ज्वालां पश्यति सद्य एव मरणं कालो चितज्ञानिनाम् ।।२३।।

जो रोगी जलमें पूर्ण चन्द्रमा और सूर्यके प्रतिबिम्बमें पूर्वकी ओर दक्षिणकी एवं उत्तर और पश्चिमकी ओर छिद्र देखे तो वह क्रमानुसार ६ । २ । ३ ।१ मासतक जीता है. जो सूर्य और चन्द्रमाके प्रतिबिम्ब को धुंधला देखे तो दश दिनमें मृत्यु होवी है और जो सूर्य चन्द्र प्रतिबिम्बमें ज्वाला देखे तो उसकी शीघ्र मृत्यु होगी यह कालके ज्ञाताओंने कहा है ।। २३ ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे कालज्ञान कथनं नाम
चतुर्दशः पटलः ।। १४ ।।

पञ्चदश पटल

अनाहार

ईश्वर उवाच-

अन्त्राणि कृकलासस्य करंजस्य च बीजकम् ।
पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा त्रिलोहेन तु वेष्टयेत् ।
तां वक्त्रे धारयेद्योऽसौ क्षुत्पिपासा न बाधते ।। १ ।।

महादेवजी बोले-(हे दत्तात्रेयजी !) गिरगिटकी आँते और पंजेकी मींगीको पीसकर गोली बनाय त्रिलोहसे वेष्टित करे उसको मुखमें रखनेसे भूख और प्यास नहीं लगती है ।। १ ।।

पद्मबीजं महाशालिं छागादुग्धे च पेषयेत् ।
आद्वादशदिनं भुज्यात्साज्यं तत्पायसं ततः ।। २ ।।

कमलके बीज और चावलोंको बकरीके दूधसे पीस घी मिलाय खीर बनावे उक्त खीरको बारह दिन खानेसे भूख नहीं लगती है ।। २ ।।

अपामार्गस्य बीजानि दुग्धाज्याभ्यां च पाचयेत् ।
पायसं महिषीक्षीरे भुक्तं मासं क्षुधापहम् ।। ३ ।।

अपामार्गके बीजोंके चूर्णको दूध और घी मिलाकर पचावे फिर भैंसके दूधमें खीर बनाकर खानेसे एक मासतक भूख नहीं लगती है ।। ३ ।।

कोकिलाक्षस्य बीजानि भृंगाबीजयुतानि वै ।
ताम्बूलमूलयुक्तानि तथा घृतयुतानि च ।। ४ ।।
छागीदुग्धेन सम्पेष्य कुर्य्याद्वै वटिकां नरः ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय क्षुत्पिपासा न बाधते ।। ५ ।।

तालमखानेके बाज, भृंगराजके बीज, पानकी जड़ और घी मिलाय बकरीके दूधसे पीस गोली बनाकर जो मनुष्य प्रातःकाल भक्षण करे तो उसको भूख प्यास नहीं सताती है ।। ४ ।। ५ ।।

धात्र्यपामार्गबीजानि पद्मबीजयुतानि वै ।
तुलसीमूलयुक्तानि कुर्यात्तद्वटिकां बुधः ।। ६ ।।
तस्या भक्षणमात्रेण तस्योपरि गवां पयः ।
क्षुत्पिपासां हरेन्नित्यं नान्यथा मम भाषितम् ।। ७ ।।

आंवलेके बीज, अपामार्गके बीज, कमलके बीज तुलसीदलोंको मिलाय मनुष्य गोली बनावे ।। और प्रातःकाल गोली खाकर गौका दूध पीनेसे भूख प्यास नहीं लगती है यह अनाहारप्रयोग मेरा कहा हुआ सत्य जानो ।। ६ ।। ७ ।।

सरसैरंडपत्रैश्च पुष्पैश्चापि सुलक्षयेत् ।
तस्मान्मूलं समादाय ताम्बूले दृढमात्रतः ।। ८ ।।
भक्षणं प्रातरुत्थाय क्षुत्पिपासाहरं परम् ।
अनाहार प्रयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ।। ९ ।।

अंडके कोमल फूल पत्तोंको देख उसकी जड लावे और पानमें भलीभांतिसे रखकर प्रात:काल उठकर खानेसे भूख प्यास जाती रहती है इस अनाहारके प्रयोगको मेरा कहा सत्य जानो ।। ८ ।। ९ ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे अनाहारप्रयोगो नाम पञ्चदश: पटल: ।। १५ ।।

षोडश पटल

आहार

ईश्वर उवाच

बन्धूकस्य च वृक्षस्य पिष्ट्वा पुष्पफलानि वै ।
योऽसौ भुंक्ते घृतेस्सार्द्धं भोजनं भीमसेनवत् ।। १ ।।

शिवजी बोले—(हे दत्तात्रेयजी !) दुपहरिया वृक्षके फल और फूलोंको पीसकर घीके साथ खानेसे भीमसेनके समान अधिक भोजन करता है ।। १ ।।

शनौ विभीतवृक्षस्य सन्ध्यायामभिमंत्रितम् ।
प्रात: पत्राणि संगृह्य भोजनेऽङ्घ्रितले न्यसेत् ।। २ ।।

शनीचरके दिन भिलावेके वृक्षको संध्यासमय अभिमंत्रित कर आवे और प्रात:काल उसके पत्तोंको लाय चरणतले दाबकर भोजन करे तो अधिक भोजन करेगा ।। २ ।।

गृहीत्वा मंत्रितं मंत्री विभीततरुपल्लवम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते पुष्कलाहाभुग्भवेत् ।। ३ ।।

मंत्रसे अभिमंत्रित कर भिलावेके पत्ते तोडकर दहने हाथमें बांध भोजन करे तो अधिक भोजन करेगा ।। ३ ।।

आहारे सत्प्रयोगोऽयं भोजनं भीमसेनवत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं प्रयत्नत: ।। ४ ।।
ओं नम: सर्वभूताधिपतये हुं फट् स्वाहा ।

'ओं नमः सर्वभूताधिपतये हुं फट स्वाहा' यह मन्त्र है। इस मन्त्रसे अभिमंत्रित कर इस श्रेष्ठ प्रयोगका अनुष्ठान करनेसे भीमसेनके समान मनुष्य भोजन करसकता है। इस प्रयोगको हर किसीको न देकर गुप्त रक्खे ॥ ४ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे आहारप्रयोगो नाम षोडशः पटलः ॥ १६ ॥

सप्तदश पटल

निधिदर्शन

ईश्वर उवाच–

शिरीषवृक्षपंचांगं कटुतैलेन पाचितम् ।
धत्तूरबीजसंयुक्तं विषेणैव युतं तथा ॥ १ ॥

शिवजी बोले–(हे दत्तात्रेयजी !) सिरस वृक्षके पचांगको लेकर कड़ुए तेलमें पकावे फिर उसमें धतूरेके बीज और विष मिलावे ॥ १ ॥

पञ्चांगं करवीरस्य श्वेतगुञ्जासमन्वितम् ।
उलूकविष्ठासंयुक्तं गन्धकं च मनशिशला ॥ २ ॥
धूपं दत्त्वा जपेन्मन्त्रं निधिस्थाने विशेषतः ।
पलायन्ते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥ ३ ॥
राक्षसा भूतवेताला देवदानवपन्नगाः ।
सुखेनाशु निधिं प्राप्य परमानन्दभुग्भवेत् ॥ ४ ॥

मन्त्रः–ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधिदर्शनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

कनेरके पचांगमें सफेद घुंघुची, उल्लूकी बीट, गन्धक और मनशिल मिलावे फिर मंत्र पढकर निधिस्थानमें उसकी धूप देनेसे जैसे कायर पुरुष युद्धसे भाग जाते हैं वैसेही निधिस्थानको छोड़कर राक्षस, भूत बेताल, देव, दानव और पन्नग भागजाते हैं, तब सुखसहित निधिको

पाय मनुष्य परमानन्दको भोगता है ।। २–४ ओं नमो विघ्नविनाशय०' यह मंत्र है ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वर संवादे निधिदर्शनं नाम
सप्तदश: पटल: ।। १७ ।।

अष्टादश पटल

वन्ध्यापुत्रवतीकरण

ईश्वर उवाच

जन्मवंध्याः काकवन्ध्या मृतवत्साः क्वचित्स्त्रियः ।
तासां पुत्रप्रापणाय कथयामि विधिं वरम् ।। १ ।।

शिव बोले—जन्मवंध्या (जिनके सन्तान हुई ही नहीं) काकवन्ध्या (जिनके एक वार सन्तान होकर फिर नहीं होती) और मृतवत्सा (जिनकी सन्तान होकर मर जाती है) इनके पुत्रप्राप्तिके कारण श्रेष्ठ विधिको कहता हूं ।। १ ।।

पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम् ।
ऋत्वन्ते तच्च पीतं चेद्वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ।। २ ।।
एवं सप्तदिनं कुर्याच्छोकोद्वेगविवर्जितम् ।
पतिसंगगता सा च नात्र कार्या विचारणा ।। ३ ।।

ढाकके पत्तोंको गर्भवती स्त्रीके दूधमें पीस ऋतुकालके उपरान्त वन्ध्या स्त्री पीनेसे पुत्रवती होती है । उक्त प्रयोगको सात दिन तक शोक और उद्वेगको त्यागके करे तो वह पतिके सहवास करनेसे निःसन्देह पुत्रवती होती है ।। २ ।। ३ ।।

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवां क्षीरे कन्याहस्तेन पेषयेत् ।। ४ ।।

ऋतुकाले पिबेद्वंध्या पलार्द्धं तद्दिने दिने ।
क्षीरं शाल्यन्नमुद्गौ च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ।
एवं तप्तदिनं कृत्वा वंध्या भवति पुत्रिणी ।। ५ ।।

रविवारके दिन जड सहित सर्पाक्षी वृक्षको उखाड एक रंगवाली गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसावे और ऋतुकालमें उसको १ तोला प्रतिदिन पीवे साथमें दूध भात मूंग आदि हलका अन्न भोजन करे तो वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ।

एकमेव रुद्राक्षं सर्पाक्षीं कर्षमात्रिकाम् ।
पूर्ववञ्च गवां क्षीरे ऋतुकाले प्रदापयेत् ।। ६ ।।
महागणेशमंत्रेण रक्षां तस्याश्च कारयेत् ।। ७ ।।
मन्त्र—मदनमहागणपते रक्षामृत मत्सुतं देहि ।।

एक रुद्राक्ष दो तोले सर्पाक्षी एक रंगावली गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसाय ऋतुकालमें स्त्रीको पिलावे और महागणेशके मन्त्रसे रक्षा करे ।। मन्त्र मूलमें स्पष्ट लिखा है ।। ६ ।। ७ ।।

उद्वेगं भयशोकौ च व्यायामं परिवर्जयेत् ।
अनङ्गमुष्णशीतं च दिवा निद्रां तथैव च ।। ८ ।।
न कर्म कारयेत्किञ्चिद्वर्जयेच्छीतमातपम् ।
न तया परमां सेवां कारयेत्पूर्ववत्क्रियाम् ।। ९ ।।
पतिसंगाद्गर्भलाभो नात्र कार्या विचारणा ।। १० ।।

उद्वेग, भय, शोक, व्यायामको छोड दे कामक्रीडा, गर्मी, सर्दी और दिनमें सोना त्याग दे । परिश्रमका काम न करे । अधिक सर्दी और गर्मीके कामोंको त्याग दे । अधिक सेवा और पूर्वके समान काम न करावे तो पतिके सहवाससे निश्चय पुत्र प्राप्त होगा ।। ८–१० ।।

पत्रं श्वेतकदम्बस्य बृहतीमूलमेव च ।
एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पेषयेत् ।। ११ ।।

त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा पिबेदेवं महौषधिम् ।
सत्यं पुत्रवती वन्ध्या नान्यथा मम भाषितम् ।। १२ ।।

सफेद कदम्बके पत्ते और बडी कटाईकी जडको बराबर ले बकरीके दूधसे पीसे फिर इस महौषधिको तीन वा पांच रात्रि पीवे तो वन्ध्या स्त्री निश्चय पुत्रवती होती है ।। ११।१२ ।।

कृष्णापरजितामूलमजक्षीरेण संपिबेत् ।
ऋतुस्नाता त्रिधा या तु वंध्या गर्भधरा भवेत् ।। १३ ।।

काले विष्णुक्रान्ताकी जडको बकरीके दूधके साथ ऋतुकालके पीछे तीन दिन पीनेसे वन्ध्या स्त्री गर्भको धारण करती है ।। १३ ।।

तुरंगगन्धाधृतवारिसिद्धं साज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा ।
प्राप्नोति गर्भं विषयं चरन्ती वन्ध्यापि पुत्रं पुरुषप्रसंगात् ।।१४।।

असगन्धको घी और जलमें सिद्ध करे पीछे उसे घी और दूधके साथ ऋतुस्नानके दिन पिलावे और शयन करनेके समय घृत पिये तो वन्ध्या स्त्री पतिके संगसे गर्भधारण करती है ।। १४ ।।

सपिप्पलीकेशरभृगवेरं क्षुद्रायणं गव्यघृतेन पीतम् ।
वंध्यापि पुत्रं लभते हठेन योगोत्तमोऽयं हि शिवेन प्रोक्तः ।।१५।।

पीपल, केशर, अदरख और छोटी गोल मिर्चको . घीके साथ पीनेसे वन्ध्या स्त्री पति के सहवाससे गर्भ धारण करती है यह उत्तम योग शिवजीने कहा है ।। १५ ।।

शीततोयेन संपिष्य शरपुंख्याश्च मूलकम् ।
पिबेद्गर्भधरा नारी सा वंध्या पतिसंगतः ।। १६ ।।

शरपुंखेकी जडको शीतल जलमें पीसकर पीनेसे वन्ध्या स्त्रीभी पतिसंगमें गर्भको धारण करती है ।। १६ ।।

समूला सहदेवी च संग्राह्या पुष्यभास्करे ।
छायाशुष्कं च चूर्णन्तु एकवर्णगवां पयः ।
पूर्ववद्या पिबेन्नारी वंध्या भवति पुत्रिणी ।। १७ ।।

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारके दिन जडसमेत सहदेवीके वृक्षको लाय छायामें सुखाकर चूर्ण करे उस चूर्णको एकरंगवाली गौके दूधके साथ पूर्व कही रीतीके अनुसार पीनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ।। १७ ।।

नागकेशरचूर्णन्तु नूतने गव्यदुग्धके ।
पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ।।
ऋत्वन्ते लभते गर्भं सा नारी पतिसंगतः ।। १८ ।।

नागकेशरका चूर्ण नई ब्याई हुई गौके दूधके साथ ऋतुस्नानके उपरान्त सात दिन पीवे और घी दूधका भोजन करे तो वह नारी पतिके सहवाससे गर्भको धारण करती है ।। १८ ।।

गोक्षुरस्य च बीजन्तु पिबेन्निर्गुण्डिकारसैः
त्रिरात्रं पंचरात्रं च वंध्या भवति पुत्रिणी ।। १९ ।।

गोखरूके बीजोंका चूर्ण निर्गुण्डीके रसमें तीन वा पांच दिन पीनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ।। १९ ।।

कर्कोटबीजचूर्णन्तु एकवर्णगवां पयः ।
घृते पिबेच्च मासन्तु वन्ध्या भवति पुत्रिणी ।। २० ।।

कर्कोटवृक्षके बीजोंका चूर्ण एक रंगवाली गौके दूध और घीके साथ एक मास पीनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ।। २० ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे श्रीदत्तात्रेयेश्वरसंवादे इन्द्रजालकौतुकदर्शनं-
नाम अष्टादशः पटलः ।। १८ ।।

एकोनविंशपटल

मृतवत्साजीवन

ईश्वर उवाच–

गर्भः सञ्जातमात्रो वा पक्षे मासे च वत्सरे ।
म्रियते द्वित्रिवर्षादिर्यस्याः सा मृतवत्सका ।। १ ।।

शिवजी बोले–(हे दत्तात्रेयजी !) जिस स्त्रीके गर्भ रहते ही गिर जाय, या गर्भमें बालक खंडित होजाय वा बालक उत्पन्न होते ही मर जाय या दो तीन वर्षका बालक होकर मरजाय तो उस स्त्रीको मृतवत्सा कहते हैं ।। १ ।।

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे ह्यपामार्गस्य मूलकम् ।
गृहीत्वा लक्ष्मणामूलं एकवर्णगवां पयः ।। २ ।।
पीत्वा सा लभते गर्भं दीर्घजीवी सुतो भवेत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ।। ३ ।।

शुभ नक्षत्रमें अपामार्गकी जड और लक्ष्मणाकी जड लाकर एक रंगवाली गौके दूधके साथ पीनेसे स्त्री गर्भ धारण कर दीर्घजीवी पुत्रको प्राप्त करती है इस मेरे सत्य प्रयोगको हर एक मनुष्यको न दे ।। २ ।। ३ ।।

वंध्या कर्कोटिकाकन्दं भृंगराजेन पेषयेत् ।
ऋतुकाले त्र्यहं पीत्वा दीर्घजीविसुतं लभेत् ।। ४ ।।

कूष्मांडीकी जडको भांगरेके रसमें पीस ऋतुकालके उपरान्त तीन दिन पीनेसे वन्ध्या स्त्री दीर्घजीवी पुत्रको प्राप्त करती है ।। ४ ।।

मार्गशीर्षे तथा ज्येष्ठे पूर्णायां लेपिते गृहे ।
नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयैश्च कारयेत् ।। ५ ।।

अगहन वा जेठकी पूर्णिमाको घर लीप नवीन कलश स्थापित करे और उसमें चन्दन आदिसे युक्त सुगंधित जल भरे ।। ५ ।।

---

१ जिसके गौके दूधके समान सफेद फूल, पानके समान दल और बीचमें लाल रेखा हो उसे लक्ष्मणा कहते हैं ।।

कदलीस्तंभसंयुक्तं नवरत्नसमन्वितम् ।
सुवर्णमुद्रिकायुक्तं षट्कोणस्थितमंडलम् ।। ६ ।।
तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकान्ते नामविश्रुताम् ।
गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपनैवेद्यसंयुतैः ।। ७ ।।

और उसके आगे षट्कोण यन्त्र लिखे चारों ओर केलेके खम्भे गाड नवरत्नोंकी बंदनवार लगाय सुवर्णकी अंगूठी यन्त्रके बीचमें रक्खे और एक मन होकर गंध पुष्पाक्षत धूप दीप नैवेद्यसे आगे लिखे देवियोंका नाम लेकर पूजन करे ।। ६ ।। ७ ।।

वाराही च तथा चैन्द्री ब्राह्मी माहेश्वरी तथा ।
कौमारी वैष्णवी देवी षट्सु पत्रेषु मातरः ।। ८ ।।
पूजयेन्मंत्रभावेन तथा सप्तदिनावधि ।
अष्टमेऽन्हि सुतं चैकं कन्यानवकसंयुतम् ।। ९ ।।
भोजयेद्दक्षिणां दद्यात्पश्चात्कृत्वाभिवादनम् ।
विसृज्य देवतां चाथ नद्यां तत्कलशादिकम् ।। १० ।।
प्रतिवर्षमिदं कुर्य्याद्दीर्घजीवी सुतो भवेत् ।
सिद्धियोगो ह्ययं ज्ञेयो गोपनीयः प्रयत्नतः ।। ११ ।।

मन्त्रः—ॐपरब्रह्मपरमात्मने अमुकीगृहे दीर्घजीविसुतं कुरु कुरु स्वाहा

१ वाराही, २ ऐन्द्री, ३ ब्राह्मी, ४ माहेश्वरी, ५ कौमारी और ६ वैष्णवीका उपरोक्त षट्कोण दलके चक्रमें मंत्रभावसे ७ दिन पूजन करे आठवें दिन एक कुमार और नौ कुमारियोंको भोजन कराय दक्षिणा दे फिर उनको प्रणामकर देवियोंको विसर्जन कर कलशका नदीमें विसर्जन करे । प्रत्येक वर्ष इसभांति अनुष्ठान करनेसे दीर्घ जीवी पुत्र उत्पन्न होता है तत्काल सिद्धि देनेवाला यह प्रयोग यन्त्रके साथ गुप्त रक्खे 'ओं पर ब्रह्मपरमात्मने०' इत्यादि मंत्र है ।। ८–११ ।।

या बीजपूरद्रुमभूलमेकं क्षीरेण सिद्धं हविषा विमिश्रम् । ऋतौ निपीय स्वपति प्रयाति दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ।। १२ ।।

जो दाडिमवृक्षकी जड दूधसे सिद्ध कर घी मिलाय ऋतुस्नानके पीछे पीकर पतिके पास जाय तो वह दीर्घजीवी पुत्रको उत्पन्न करती है ।। १२ ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे श्रीदत्तात्रेयेश्वरसंवादे मृतवत्सासुतजीवन प्रकारो नामैकोनविंशतितमः पटलः ।। १९ ।।

विंश पटल

काकवंध्याकी चिकित्सा

ईश्वर उवाच

पूर्वं पुत्रवती या सा पश्चाद्वंध्या भवेद्यदि ।
काकवंध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते ।। १ ।।

शिवजी बोले--(हे दत्तात्रेयजी !) जो एकही बार संतान उत्पन्न करके पीछे वन्ध्या होजाय उसको काकवन्ध्या कहते हैं अब उसकी चिकित्सा कहता हूँ ।। १ ।।

विष्णुक्रान्तां समूलां च पिष्ट्वा माहिषदुग्धके ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले च भक्षयेत् ।। २ ।।
एवं सप्तदिनं कुर्यात्पथ्ययुक्तं च पूर्ववत् ।
सा गर्भं लभते नारी काकवंध्या सुशोभनम् ।। ३ ।।

विष्णुकान्ताको जड़सहित भैंसके दूधमें पीस और भैंसकेही मक्खनके साथ ऋतुस्नानके पीछे सात दिन खाय और पूर्वके समान हलका भोजन करे तो काकवन्ध्या नारी सुन्दर गर्भको धारण करती है ।। २ ।। ३ ।।

अश्वगंधीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।
योजयेन्महिषीक्षीरैः पलार्द्धं भक्षयेत्सदा ।। ४ ।।
सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवंध्या न संशयः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ।। ५ ।।

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारके दिन असगन्धकी जड लाय भैंसके दूधमें आधे पलभर सदा भक्षण करे। इस भांति ७ दिनके सेवन करनेसे

काकवन्ध्या नारी निश्चय गर्भको धारण करती है । हरेक मनुष्यको मेरे कहे इस सत्य प्रयोगको न दे ।। ४ ।। ५ ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे श्रीदत्तात्रेयेश्वरसंवादे काकवन्ध्याचिकित्सावर्णनं नाम विंशतितमः पटलः ।। २० ।।

एकविंश पटल

जयकी विधि

ईश्वर उवाच

मार्गशीर्षस्य पूर्णायां शिखीमूलं समुद्धरेत् ।
बाहौ शिरसि वा धार्य विवादे विजयी भवेत् ।। १ ।।

शिवजी बोले–(हे दत्तात्रेयजी !) मार्गशीर्षकी पूर्णिमाके दिन चितावृक्षकी जडको उखाड भूजामें वा शिरमें धारण करे तो विवादमें विजय होती है ।। १ ।।

करे सौदर्शनं मूलं बद्ध्वा रणकुले जयी ।
आर्द्रायां वटवृन्दां वा हस्ते बद्ध्वाऽपराजितः ।। २ ।।

हाथमें सुदर्शनकी जड बांधनेसे रणमें जय होती है, आर्द्रा नक्षत्र में बरगदका बन्दा वा अपराजिताका बन्दा हाथमें बान्धनेसे रणमें जय मिलती है ।। २ ।।

तदृक्षे चूतवृन्दाकं गृहीत्वा धारयेत्करे ।
संग्रामे जयमाप्नोति जयां स्मृत्वा जयी तथा ।। ३ ।।

आर्द्रानक्षत्रमें आमका वंदा हाथमें बांधनेसे संग्राममें जय प्राप्त होती है और जयादेवीका स्मरण करनेसे भी जय प्राप्त होती है ।। ३ ।।

कृत्तिका वा विशाखा वा भौमवारेण संयुता ।
तद्दिने घटितं शस्त्रं संग्रामे जयदायकम् ।। ४ ।।

कृत्तिका वा विशाखा नक्षत्र मंगलवारके दिन हो तो शस्त्र बनवावे उस दिनका बना शस्त्र संग्राममें जय देता है ।। ४ ।।

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुञ्जां समूलिकाम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते संग्रामे विजयी भवेत् ।। ५ ।।

पुष्य नक्षत्रमें सफेद घुंघुचीको जडसहित उखाड दहने हाथमें धारण करनेसे संग्राममें जय होती है ।। ५ ।।

धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम् ।
हरितालयुतं कुर्यात्तिलकं सुदिने कृती ।। ६ ।।
अजाक्षीरेण संपेष्य रणे राजकुले जयी ।
विरोधे दूतकार्ये च नान्यथा मम भाषितम् ।। ७ ।

धतूरे कनेर और अपामार्गकी जड हरतालके साथ बकरीके दूधमें पीस तिलक लगानेसे राजदरबारमें, विरोधमें और दूतके कार्यमें निश्चय जय प्राप्त होती है ।। ६ ।। ७ ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे जयसंवादौ नामैक-
विंशतितमः पटलः ।। २१ ।।

द्वाविंश पटल

वाजीकरण

ईश्वर उवाच

बलेन नारी परितोषमेति न हीनवीर्यस्य
कदापि सौख्यम् । अतो बलार्थं रतिलम्प-
टस्य वाजीविधानं प्रथमं प्रवक्ष्ये ।।१ ।।

शिवजी बोले–(हे दत्तात्रेय जी !) बलसे नारी प्रसन्न होती है अतएव बलहीन पुरुषको कभी सुख नहीं होता इस कारण रतिके अभिलाषी पुरुषकी निर्बलता दूर करनेके लिये प्रथम वाजीकरणको कहता हूं ।। १ ।।

निक्षिपेन्मृण्मये पात्रे चूतवृक्षस्य वल्कलम् ।
तस्योपरि जलं क्षिप्त्वा ततो वस्त्रेण रक्षयेत् ।। २ ।।

आमकी छालको लेकर मिट्टीके पात्रमें रक्खे फिर उसमें जल डाल कर वस्त्रसे ढक दे ।। २ ।।

प्रातर्दुग्धेन सहितं यः पिबेन्मदनातुरः ।
धातुवृद्धिकरं लोके बलपुष्टिकरं नृणाम् ।। ३ ।।

प्रातसमय जो पुरुष दूधके साथ पिये तो धातुकी वृद्धि हो एवं बलवान् और पुष्ट हो ।। ३ ।।

कुमारीकंदमादाय गोक्षीरेण च यः पिबेत् ।
बलपुष्टिकरं धातुर्जायते नात्र संशयः ।। ४ ।।

घीग्वारकी जडको गोके दूधके साथ पानसे मनुष्य निश्चय बलवान् होजाता है और उसकी धातु पुष्ट होती है ।। ४ ।।

भिण्डीफलं गृहीत्वा तु रविवारे च पूर्ववत् ।
छायाशुष्कं च तच्चूर्णमश्वगन्धा समन्वितम् ।। ५ ।।
मुशली गोक्षुरं चैव विजयाबीजसंयुतम् ।
एकवर्णगवां क्षीरे यः पिबेट्टङ्कमात्रतः ।। ६ ।।
बलपुष्टिकरं देहे स्तम्भकं धातुवृद्धिकृत् ।
सिद्धयोगमिमं कृत्वा कामदेवो भवेन्नरः ।। ७ ।।

रविवारके दिन भिंडीके फलको ले पूर्व समान छायामें सुखाय उसका चूर्णकरे फिर असगन्ध, मुशली, गोखरू और भाँगके बीज मिलाय जो मनुष्य ४ मासे गौके दूधके साथ पीवे तो उसका शरीर बलवान् एवं पुष्ट होता है और उसकी धातु अचल होकर बढती है, इस सिद्धयोगसे मनुष्य कामदेवके समान रूपवान् होजाता है ।। ५–७ ।।

अश्वत्थफलमानीय छायाशुष्कं तुकारयेत् ।
दुग्धसार्द्धं पिबेत्सत्यं जायते मकरध्वजः ।। ८ ।।

पीपलके फलको ले छायामें सुखाय चूर्ण कर दूधके साथ पीनेसे निश्चय कामदेवके समान बलवान् होजाता है ।। ८ ।।

गृहीत्वा ह्यमृतामूलं रविवारेऽभिमंत्रितम् ।
छायाशुष्कं यस्य चूर्णं शर्करासहितं परम् ।। ९ ।।
महापुष्टिकरं पुंसां तस्योपरि गवां पयः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं रक्षणीयं सुयत्नवत् ।। १० ।।

रविवारको गिलोयकी जड ले मन्त्रसे अभिमंत्रित कर छायामें सुखाय चूर्णकर चीनी मिलावे।।फिर उसे खाय ऊपरसे गौका दूध पीवे तो मनुष्यको महापुष्टि देता है इस प्रयोगकी यत्नसे रक्षा कर हरेक को न दे ।।९–१०।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादेबाजीकरण-
प्रयोगो नाम द्वाविंशतितमः पटलः ।। २२ ।।

त्रयोविंश पटल

द्रावणादिकथन

ईश्वर उवाच–सिता चोशीरतगरकुसुंभक्षौद्रलेपनम् ।
द्रावणं कुरुते स्त्रीणां विना मंत्रेण सिद्ध्यति ।। १ ।।

शिवजी बोले–(हे दत्तात्रेयजी !) मिश्री, खस और तगरको शहतमें मिलाय कामध्वजापर लेप करनेसे संभोग समयमें स्त्री शीघ्र स्खलित होजाती है ।। १ ।।

बृहतीफलमूलानि पिप्पलीर्मरिचानि च ।
मधुना रोचनासार्द्धं लिंगे लिम्पेद्द्रवः स्त्रियाः ।। २ ।।

कटेरीके फल और जड लेकर पीपल, मरिच, गोरोचन और शहतके साथ मिलाय इन्द्रियपर लेप करनेसे रतिकालमें स्त्री द्रवित हो जाती है ।। २ ।।

गंधकं च शिलाघृष्टं लेपयेत्क्षौद्रसंयुतम् ।।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ।। ३ ।।

गंधकको शहतके साथ पत्थरपर घिसकर लेप करनेसे स्त्री शीघ्र द्रवीभूत होती है यह मेरा कहा हुआ सत्य प्रयोग हरएक मनुष्यको न हीं देना ।।३।।

वीर्यस्तम्भनप्रयोग

कर्पूरष्टंकणं सूतं तुल्यं मुनिरसंमधु ।
मर्द्दयित्वा लिपेल्लिङ्गं स्थित्वा यामं तथैव च ।। ४ ।।

ततः प्रक्षालयेल्लिङ्गं रमेद्रामां यथोचिताम् ।
वीर्यस्तंभकरं पुंसां सिद्धयोग उदाहृतः ।। ५ ।।

कपूर,सुहागा और पारेको बराबर ले शहतमें घोट कामध्वजापर लेप करे और एक पहरके पीछे कामध्वजाको धो डाले फिर उचित समयमें रमण करनेसे पुरुषका वीर्य स्तंभित होता है यह सिद्ध प्रयोग मैंने कहा है।।४–५

मधुना पद्मबीजानि पिष्ट्वा नाभिं प्रलेपयेत् ।
यावत्तिष्ठत्यसौ लेपस्तावद् वीर्यं न मुंचति ।। ६ ।।

कमलगट्टोंको शहतके साथ पीस नाभिपर लेप करे जबतक यह लेप नाभिपर रहेगा तबतक पुरुषका वीर्य नहीं गिरेगा ।। ६ ।।

सूकरस्य तु दंष्ट्राग्रं दक्षिणं च समाहरेत्
कट्यां बद्ध्वा पटेनैव शुक्रस्तंभः प्रजायते ।। ७ ।।

सूकरकी दाहिनी दाढको ले वस्त्रसे लपेट कमरमें बांधकर रमण करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ।। ७ ।।

तुलसीबीजचूर्णन्तु ताम्बूलैस्सह भक्षयेत् ।
न मुंचति नरो बीर्यं नाडीनां सप्तकावधि ।। ८ ।।

तुलसीके बीजोंका चूर्ण पानमें रखकर खानेसे रमणकालमें सात घडीतक पुरुषका वीर्य नहीं गिरता है ।। ८ ।।

इन्द्रवारुणिकामूलं पुष्ये नग्नः समुद्धरेत् ।
कटुत्रयैर्गवां क्षीरे सम्पिष्य गोलकीकृतम् ।। ९ ।।
छायाशुष्कं स्थितं चास्ये वीर्यस्तम्भकरं परम् ।
नीलीमूलं स्मशानस्थं कटयां बद्ध्वा तु वीर्यधृक् ।। १० ।।

पुष्यनक्षत्रमें नग्न होकर इन्द्रायणकी जडको उखाड सोंठ, मिर्च पीपल के साथ गौके दूधमें पीस गोली बनावे इन गोलियोंको छायामें सुखावे इस गोलीको मुखमें रखनेसे वीर्य स्तंभित होता है। स्मशानमें स्थित नीली वृक्षकी जडको लाकर कमरमें बाँधनेसे वीर्य स्तंभित होता है ।। ९-१० ।।

रक्तापामार्गमूलं तु सोमवारे निमंत्रयेत् ।
भौमे प्रातस्समुद्धृत्य कटयां बद्ध्वा तुवीर्यधृक् ।। ११ ।।

लाल आपामार्गकी जडको सोमवारके दिन न्योता दे आवे और मंगलवारको प्रातःसमय उखाडकर कमरमें बांधनेसे वीर्य स्तंभित होता है ।। ११ ।।

तिलगोक्षुरयोश्चूर्णं छागीदुग्धे च पाचितम् ।
शीतलं मधुना युक्तं भक्षितं द्रावकं स्त्रियाः ।। १२ ।।

तिल और गोखरूका चूर्ण बकरीके दूधमें पकावे शीतल होनेपर शहत मिलाय भक्षण करनेसे रमण समय स्त्री स्खलित होजाय और पुरुषका वीर्य रुका रहे ।। १२ ।।

चटकांडं गृहीत्वा तु नवनीतेन पेषयेत् ।
तेन प्रलेपयेत्पादौ शुक्रस्तंभः प्रजायते ।।
यावन्न स्पृशते भूमिं तावद् वीर्यं न मुंचति ।। १३ ।।

चटकपक्षीके अंडेको लेकर मक्खनमें पीस चरणके तलवोंमें लेप करनेसे वीर्यस्तंभित उस समयतक रहता है जबतक भूमिपर चरण न रक्खे।। १३।।

डुंडुभो नामतः सर्पः कृष्णवर्णस्तमाहरेत् ।
तस्यास्थि धारयेत्कटयां नरो वीर्यं न मुंचति ।।
विमुंचति विमुक्ते तु सिद्धयोग उदाहृतः ।। १४ ।।

डुंडुभनामके काले सर्पकी हड्डीको कमरमें बांधनेसे पुरुषका वीर्य नहीं गिरता इस सिद्धयोगके प्रतापसे जब वह हड्डी कमरसे खोलीजाय तभी वीर्य गिरता है ।। १४ ।।

आम्लक्या वल्कलानां जलेन क्षालयेद्भगम् ।
वृद्धापि कामिनी कामं बालावत्कुरुते रतिम् ।। १५ ।।

प्रतिदिन आंवलेके वकलोंको जलमें पीसकर उस जलसे यदि काम-मन्दिरको धोवें तो वृद्धा नारी भी बालाके समान रति करती है ।। १५ ।।

खसपलशुंठिक्वाथः षोडशेषेण गुडेन निशि पीतः ।
कुरुते रतौ न पीतो रेतः पतनं विनाम्लेन ।। १६ ।।

एकपल खस लेकर सोंठके क्वाथमें सोलहवां भाग गुड मिलाय रात्रिके समय पीसकर रति करे तो जबतक खटाई न खाय तबतक पुरुषका वीर्य स्खलित नहीं होता ।। १६ ।।

केशरञ्जनवर्णन

त्रिफलालौहचूर्णन्तु वारिणा पेषयेत्समम् ।
द्वयोस्तुल्येन तैलेन पचेन्मृद्वग्निना क्षणम् ।। १७ ।।
तैलतुल्ये भृंगरसे तत्तैलं तु विपाचयेत् ।
स्निग्धभांडगतं भूमौ स्थितं मासान्समुद्धरेत् ।। १८ ।।
सप्ताहं लेपयेद्वेष्टच कदल्याश्च दलैः शिरः ।
निर्वाते क्षीरभोजी स्यात्क्षालयेत्त्रिफलाजलैः ।। १९ ।।
नित्यमेवं प्रकर्तव्यं सप्ताहाद्रंजनं भवेत् ।
यावज्जीवं न सन्देहः कचाः स्युर्भ्रमरोपमाः ।। २० ।।

त्रिफलेका (हरड बहेडा आमलेका) चूर्ण और लोहचूर्ण समान लेकर जलमें पीसे फिर दोनोंके बराबर तेल डाल मन्द २ आंचसे पकावे । शीतल होनेपर उस तेलकी बराबर भांगरेका रस मिलाय आचमें पकावे फिर चिकने बर्तनमें भरकर पृथ्वीमें गाडदे महीनेभरके पींछे निकाले ।। उस तेलको शिरमें ७ दिनतक लगावे और ऊपरको केलेको पत्तेको ऐसे लपेटे

जिसमें वायु न लग सके इन दिनोंमें दूध पीवे और खोलनेके समय त्रिफलेके जलसे धो डाले । इस सात दिनके प्रयोगसे केशरंजन होता है केशरंजन होनेपर जीवन पर्यन्त मनुष्यके शिरके बाल भौंरेके समान काले बने रहते हैं ॥१७–२०॥

काश्मर्या मूलमादौ सहचरकुसुमं केतकीनां च मूलं लौहं चूर्णं भृंगं त्रिफलजलयुतं तैलमेभिर्विपक्वम् । कृत्वा वै लोहभांडे क्षितितलनिहितं मासमेकं विधाय केशाकाशप्रकाशा भ्रमरकुलनिभा लेपनादेव कृष्णाः ॥ २१ ॥

कुम्हेरनकी जड, पियावासाके फूल, केतकीकी जड, भांगरा, त्रिफला, जल और तेलको मिलाय लोहेके बर्त्तनमें रखकर पकावे, फिर एक मासतक पृथ्वीमें गडा रहने दे उपरान्त निकालकर केशोंमें लगावे तो केश भौंरेके समान काले और लम्बे होजाते हैं ॥ २१ ॥

त्रिफला लोहचूर्णं च इक्षुर्भृङ्गरसस्तथा ।
कृष्णमृत्तिकया सार्द्धं भांडे मासं निरोधयेत् ।
तल्लेपाद्रंजयेत्केशांश्चतुर्मासे स्थिरो भवेत् ॥ २२ ॥

त्रिफला, लोहचूर्ण, ईख और भांगरेके रसको बराबर और सबसे आधी काली मट्टी मिलाय एक महीनेतक गडा रक्खे फिर केशोंपर लेप करनेसे चार मासतक बाल काले बने रहते हैं ॥ २२ ॥

लोहकिट्टं जपापुष्पं पिष्ट्वा धात्रीफलं समम् ।
त्रिदिनं लेपयेच्छीघ्रं त्रिमासावधि रंजनम् ॥ २३ ॥

लोहेकी कीट, गुडहलके फूल और आमलोंके बराबर लेकर पीस तीन दिनतक केशोंमें लेप करे तो केश तीन मासतक काले बने रहते हैं ॥ २३ ॥

लोमशातन

हरितालसुधालेपं कृत्वा लेपस्य वारिणा सद्यः
निपतंति केशनिचयाः कौतुकमिदमद्भुतं कुरुते ॥ २४ ॥

हरताल और चूनेको समान लेकर चूनेके पानीसे पीस लेप करने से बाल अतिशीघ्र गिरजाते हैं और देखनेमें बडा कौतुक मालूम होता है ॥२४॥

रम्भाजलैः सप्तदिनं विभाव्य भस्मानि कम्बो-
र्मसृणानि पश्चात् । तालेन युक्तानि विलेपनन्तु
रोमाणि निर्मूलयति क्षणेन ।। २५ ।।

केलेसे जलके शंखकी भस्मको सातदिन भावना दे हरताल मिलाय भली भांतिसे घोटे फिर रोमस्थानपर लगाते ही रोम गिर जाते हैं ।। २५ ।।

पलाशचिंचातिलमाषशंखान्दहेदपामार्गसपि-
प्पलानपि । मनश्शिलातालक चूर्णलेपात्करोति
निर्लोम शिरः क्षणेन ।। २६ ।।

ढाक, इमली, तिल, उड़द, शंख, अपामार्ग पीपल, मनशिल और हरतालके चूर्णमें चूना मिलाय लेप करनेसे क्षणमात्रमें केश गिर जाते हैं और फिर नहीं निकलते हैं ।। २६ ।।

लिङ्गवर्द्धन

वराहवसया लिङ्गं मधुना सह लेपयेत् ।
स्थूलं दृढं च दीर्घं च मुसलाकृति जायते ।। २७ ।।

सूअरकी चर्बीमें शहत मिलाय कामध्वजपर लेप करनेसे कामध्वजा स्थूल दृढ और मूसलके समान लम्बी होजाती है ।। २७ ।।

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रेदत्तात्रेयेश्वरसंवादे द्रावणादि-
कथनं नाम त्रयोविंशतितमः पटलः ।। २३ ।।

चतुर्विंश पटल

भूतग्रहादिनिवारण

ईश्वर उवाच

बिल्वमूलं देवदारु गोश्रृङ्गं च प्रियंगु च ।
पिष्ट्वा धूपो निहन्त्याशु भूतग्रहज्वरादिकान् ।। १ ।।
शाकिन्यो राक्षसाः प्रेताः पिशाचा ब्रह्मराक्षसाः ।
ऐकाहिको द्व्याहिकश्च ज्वरो नश्यति तत्क्षणात् ।। २ ।।

शिवजी बोले–(हे दत्तात्रेयजी !) बेलकी जड, देवदारु, बबूर प्रियंगूके फूल इन सबको बराबर ले पीसकर धूप बनावे उस धूपके देनेसे भूत-बाधा ग्रहबाधा ज्वरादिक नष्ट होते हैं। शाकिनी, राक्षस, प्रेत, पिशाच जनितपीडा एवं दो दिनमें आनेवाला ज्वर उसी समय दूर होजाताहै। १–२ ॥

शिरीषनिम्बयोः पत्रं गोभृङ्गस्य च त्वग्वच ।
वंशत्वक् शिखिपुच्छं च कंगुना च घृतं समम् ॥
धूपो बालग्रहान्हन्ति ह्येतन्मन्त्रेण मंत्रितः ॥ ३ ॥
मंत्रः–ॐ द्रुतं मुञ्च उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा ॥

शिरस और नीमके पत्ते एवं बबूरकी छाल, मोरकी पूछ, कांगनी-धान और घीको बराबर लेकर इनको नीचे लिखे मंत्रको पढकर धूप देनेसे बालग्रह नष्ट होजाते हैं ॥ ३ ॥ 'ओं द्रुतं मुञ्च उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा' यह मंत्र हैं ॥

श्रीवासं सैन्धवं कुष्ठं वचां तैलं घृतं वसा ।
धूपो बालग्रहे देयो ग्रहराक्षसशान्तये ॥ ४ ॥

चन्दन, सेंधा, कूठ, वच, तेल, घी और चर्बीको बराबर ले धूप देनेसे बालग्रह और राक्षसजनित भय दूर होजाता है ॥ ४ ॥

पुनर्नवानिम्बपत्रसर्षपघृतैर्विरचितो धूपः ।
गर्भिण्या बालानां सततं रक्षाकरः कथितः ॥ ५ ॥

सोंठ, नीमके पत्ते, सरसों घी इनको बराबर मिलाय धूप देनेसे बालकोंकी निरन्तर रक्षा रहती है ॥ ५ ॥

पुष्यार्के श्वेतगुञ्जाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ।
बालनां कण्ठदेशे तु डाकिनीभयनाशनम् ॥ ६ ॥

पुष्पनक्षत्र युक्त रविवारके दिन सफेद घुंघुचीकी जड उखाडकर बालकके गलेमें बांधनेसे डाकिनीका भय जाता है ॥ ६ ॥

दाडिमस्य च वृन्दाकं ज्येष्ठर्क्षे तु समुद्धरेत् ।
द्वारबंधे च बालानां सर्वग्रहनिवारणम् ॥ ७ ॥

आर्द्रानक्षत्रमें दाडिमीका बन्दा लाकरः घरके दरवाजेपर बांधदे तो तब ग्रहजनित पीडा दूर होजाती है ॥ ७ ॥

नृसिंहमंत्रवीजन्तु सकृदुच्चरितं हरेत् ।
डाकिनीप्रेतभूतानि तमः सूर्योदयो यथा ।। ८ ।।

नृसिंहमंत्रः-"ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाच डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हरहर विसरविसर पचपचहनहन कम्पयकम्पये मथमथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्फट् ठः ठः एह्योहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ।।

उपरोक्त नृसिंह भगवान्के वीजमंत्रको एक वार पढनेसे ही डाकिनी, भूतजनित पीडा दूर हो जाती है जैसे सूर्योदयसे अंधकार दूर होजाता है ।।८।।

श्वेतापराजितापत्रं जपापत्रं द्वयो रसम् ।
नस्यं कुर्यात्पलायन्ते डाकिनीदानवादयः ।। ९ ।।

सफेद अपराजिताके पत्ते और जयंतीके पत्तेका रस निकाल नस्य देनेसे डाकिनी दानवादिक भाग जाते हैं ।। ९ ।।

सिंहव्याघ्रादि भयनिवारण

पुष्यार्के तु समानीय श्वेतार्कस्य च मूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते सिंहव्याघ्रभयं नहि ।। १० ।।

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारके दिन सफेद आककी जडको लाकर दहिने हाथमें बांधनेसे सिंहव्याघ्रादिका भय नष्ट होता है ।। १० ।।

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
धारयेद्दिक्षिणे हस्ते व्याघ्रवाधाभयं नहि ।। ११ ।।

शुभनक्षत्रमें काले धतूरेकी जड लाकर दहिने हाथमें बांधनेसे व्याघ्रका भय नहीं रहताहै ।। ११ ।।

सर्पभयनिवारण

आस्तिकं मुनिराजं च नमस्कृत्य पुनः पुनः
स्वप्ने सर्पभयं नास्ति तया सर्पनिवारण् ।। १२ ।।

आस्तिक मुनिराजको वारंवार नमस्कार करनेसे स्वप्नमें भी सर्पका भय नहीं रहता और उसे देख सर्प भाग जाते हैं ।। १२ ।।

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे ह्यमृतामूलकं पुनः ।
तन्मालां धारयेत्कंठे सर्पबाधाभयं नहि ।। १३ ।।

पुष्यनक्षत्रमें गिलोयकी जड लाकर उसकी माला बनाय गलेमें धारण करनेसे सर्पका भय नहीं रहता है ।। १३ ।।

वृश्चिकभयनाशन

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे कर्णे वृश्चिकाद्भीर्न विद्यते ।। १४ ।।

शुभ नक्षत्रमें अपामार्गकी जड लाकर दहिने कानमें धारण करनेसे बीछी का भय नहीं रहता है ।। १४ ।।

अग्निभयनिवारण

गृहीत्वा रविवारे च श्वेतकरवीरमूलकम् ।
धारयेदक्षिणे हस्ते ह्यग्निबाधाभयं नहि ।। १५ ।।

मंत्रः–ॐ नमोऽग्निरूपाय ह्रीं नमः । अनेन मन्त्रेण सप्ताञ्जलिजलं वह्निमध्ये निक्षिपेत्तदा अग्निशान्तिर्भवति ।। १६ ।।

रविवारके दिन सफेद कनेरकी जड लाकर दहिने हाथमें धारण करनेसे अग्निका भय दूर हो जाता है । 'ओं नमोऽग्निरूपाय ह्रीं नमः ।' इस मंत्रको पढकर सात अंजलि जल अग्निमें छोडदे तो अग्नि शान्त होजाती है।।१५।१६।।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे भूतग्रहादिनिवारणं नाम चतुर्विंशतितमः पटलः ।। २४ ।।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

